साल 6 बेमिसाल
सामाजिक गतिविधियों का लेखा जोखा
सबसे पहले सबसे तेज

मासिक
कुमावत इंडिया
कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com
Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-8 | अंक-4 नवम्बर-2023 पृष्ठ-28 मूल्य : ₹ 20.00

मेरा वोट मेरा भविष्य

अपना कर्तव्य निभाएंगे सबसे मतदान करवाएंगे

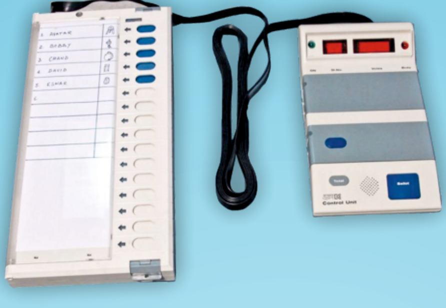

लोकतंत्र का उत्सव

DPS AJMER
Sr. Sec. School
Tabiji Farm Road, Ajmer
ESTABLISHING
The Right Environment
We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.
SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman
Archery & International
Level Shooting Range
Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"
Horse Riding Club
Won Laurels at the National Level
Our Activities
Skating Rink
Karate Club
We have won Karate Championship at District, State & National Level.
Art & Craft
Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer
Web: www.dpsajmer.in
E-Mail: info@dpsajmer.in

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

संरक्षक	:	जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
अध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	मो. 9414810584
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
		रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
		चेतन बालोदिया	मो. 9414052736
		मोहन लाल कुमावत	मो. 9887557425
मुख्य सलाहकार	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक -9414554322, जयसिंह गुड़ीवाल सह-सम्पादक 9461343432, मनीष कुमावत 9660702083, रमेश तोंदवाल 9460870125 रवि कुमावत 9829600411, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया 9351680888, प्रिया मारवाल 9408093778 **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, श्रीमती राजबाला बिर्थला 7976475370, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 व राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 **विधि सलाहकार :** राकेश कुमावत एडवोकेट 9829152561 विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397** **दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580** **सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444** **वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299** **मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188** **जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301** **कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402** **सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657** **उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044**, जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687** **ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493**, रवि बेडवाल **मो. 8290303003** **बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957** **सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812** **इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645** **किशनगढ़ :** प्रभुदयाल तुनगरिया **9680931428**

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ट संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ट संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385 यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

सम्पादकीय

आप सभी ने दीपावली का त्योहार उल्लासपूर्वक मनाया, सभी का जीवन में दीपावली के जगमग दीपों की भांति रोशन हो, यही मंगलकामना है। देव उठनी एकादशी से **शादी-विवाहों की धूम** होगी, अनेक नवयुवक-युवतियां अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे, उन सभी को हमारी शुभकामना। हमें शादी-विवाह में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये-

अपव्यय: हमारे समाज में भी वणिक समाज की देखादेखी कर, शादी में बड़ा आयोजन करने व खर्च करने की होड़ लगने लगी है। जो समाजबंधु व्यवसाय में है ओर उनकी सामर्थ्य है वो ऐसा करें तो थोड़ा समझ आता है, किन्तु नौकरी पेशा व मध्यमवर्गीय परिवार के लोग भी इसका अनुकरण करने लगे हैं। कुछ लोग उधार लेकर ऐसा कर रहे हैं इससे जीवन दुखदायी हो सकता है। अपनी आर्थिक सीमा रेखा को ध्यान रखकर खर्च करना ही श्रेयष्कर है।

प्री-वेडिंग शूट जैसी नई विधा भी शादी का हिस्सा बनती जा रही है। पाश्चात्यकरण की होड़ में हम हमारे संस्कारों से दूर न हों तो ही अच्छा है। प्री-वेडिंग शूट की वजह से रिश्तों में नकारात्मकता आयी और विवाह पूर्व ही रिश्ते टूटने की नौबत आ गई। इससे जहां फोटोग्राफी का खर्च बढ़ा वहीं रिश्तों में बिखराव की रिश्क बढ़ी। तो इसे हमें क्यों अपनाएं? पेरेन्ट्स को इस बारे में निर्णय लेना चाहिये।

फूड वेस्टेज शादी-सगाई जैसे आयोजनों में देखा जा सकता है। भारत जैसे देश में करोड़ों लोग भूखे ही सो जाते हैं वहीं आधा पेट सोने वाले कहीं ज्यादा है। दुल्हा-दुल्हन के माँ-बाप ने अपने जीवनभर की बचत से यह दावत दी होगी। फूड वेस्ट कर हम अन्न भगवान का अनादर न करें। **''उतना ही ले थाली में, न जाये यह नाली में।''** इस सम्बन्ध में यह निवेदन है कि आप कोई समारोह करें तो समारोह बाद बचा खाना किसी NGO को गरीबों में बांटने के लिए देने की व्यवस्था पहले से कर लें।

पिक पॉकेट्स (जेब कतरे) का शादियों के सीजन में मौज होती है, ऐसे अपराधी नये कपड़े पहनकर आते हैं तथा मेहमानों की जेब व सोने की चेन काट ले जाते हैं। छोटे बच्चों से चोरी कराते हैं जो ज्वैलरी व नकदी से भरे बैग को नजर चूकते ही चुरा ले जाने में माहिर होते हैं, इनका ध्यान रखें। जो लोग शादी में अपने घर बंद करके जाते हैं, वहां चोर हाथ साफ कर देते हैं। घर की सुरक्षा कैसे हो, इसका ध्यान दिया जाये।

शादी पवित्र बंधन है, यह संस्कार हमारे रीति-रिवाजों के अनुसार खुशी-खुशी पूर्ण हो, अत: सभी थोड़ी सावधानी अवश्य बरतें।

- रमेश चन्द कुमावत

हमारी वेबबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3
सरयू तट पर जलाये 21 लाख दीये	4
शरद महोत्सव रास-घूमर का आयोजन	5
यात्रा संस्मरण : प्रयोगराज	6
बूंदी में श्रीराम की शोभायात्रा निकाली व प्रतिभाओं को सम्मानित किया	7
रतनी कुमावत भारतीय मानव अधिकार सहकार ट्रस्ट महिला तहसील अध्यक्ष मनोनीत	7
राजकुमारी कुमावत महिला गोल्फ टीम की कप्तान नियुक्त	7
सामूहिक विवाह	7
गेट को लेकर विवाद से आशीष की हत्या, पड़ौसी ही निकला हत्या कराने वाला	7
क्या जरूरी है शादी में दुल्हन का बेस या लहंगा ?	8
सूचना का ज्ञान	8
अपनों के साथ रहो हमेशा	8
स्थापना दिवस विशेष : जयपुर शहर	9
प्राचीन मूल्यों का महत्व और हमारा समाज-2	10
अपच, गैस और पेट फूलने का निदान करती है मूली की चटनी	11
भावी पीढ़ी के लिए पेड़ लगाइये	11
बुजुर्ग नहीं भाग्यशाली लोग	12
सर्दी का मौसम में खानदान	13
त्वचा का रखें ध्यान	13
श्रम ही जीवन है	14
माँ से शिकायत	14
छेड़छाड़ पर 4 वर्ष का कारावास	15
डिजिटल मार्केटिंग में बनाये अपना कैरियर	16
मतदान दिवस लोकतंत्र का महापर्व	17
हिसाब	17
ईश्वर जड़-चेतन सभी में है, हमें अहंकार से बचना चाहिए	18
सांस्कृतिक ज्ञान	18
कुंडली से आयु निर्धारण	19
आईये जाने पीपल के वृक्ष के बारे में	19
विशिष्ट संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि	20
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	21
आवश्यक सूचनाएं व पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क सूत्र	22
मुकेश वर्मा को कांग्रेस महासचिवपद पर पदोन्नत किया	23
प्रभुदयाल तुनगरिया पंतजलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा सम्मानित	23
राजस्थान विधानसभा चुनाव-2023 में कुमावत समाज के प्रत्याशीगण	24
हर घर दिवाली माहेत्सव-2023	25
आरएएस व आरटीएस प्रतियोगी परीक्षा में उत्तीर्ण समाजजन	25
बधाई विज्ञापन	26
श्रद्धांजलि विज्ञापन	27

दीपावली की पूर्व संध्या पर

सरयू तट पर जलाये 24 लाख दीये

11 नवम्बर 2023, अयोध्या। दीपावली की पूर्व संध्या 11 नवम्बर 2023 को अयोध्या में पुष्पक विमान से श्रीराम आये। हेलीपेड से श्रीराम की शोभायात्रा निकाली गयी जिसे रामकथा पार्क लाया गया। रथ पर श्रीराम-जानकी के साथ तीनों भाई, हनुमान तथा गुरु वशिष्ठ सवार थे। इस रथ को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री माननीय ब्रजेश पाठक तथा राज्यपाल माननीय आनन्दीबेन पटेल खींच रहे थे। इस रथ को रामकथा पार्क लाया गया जहां पर श्रीराम का राज्याभिषक सी.एम. योगी आदित्यनाथ द्वारा किया गया।

अयोध्या में दीपावली की पूर्व संध्या पर यह 7वाँ भव्य आयोजन हुआ। सरयू तट के 51 घाटों पर 24 लाख दीये जलाएं गये, जिनकी 8 ड्रोनों से गणना की गयी तो 22 लाख 23 हजार दीप जलाने का विश्व रेकार्ड बना। दीपोत्सव पर 54 देशों के राजदूत भी समारोह का हिस्सा बने। आसमान से पुष्पवर्षा की गयी। इस अवसर पर सारी अयोध्या राममय हो गई।

निर्माणाधीन राममंदिर भी रोशन से जगमग था। समारोह को देखने लाखों लोग अयोध्या पहुँचे। हिन्दुओं की आस्था का सबसे बड़ा त्यौहार जिस भव्यता से मनाया गया उसके लिए उ.प्र. सरकार तथा कार्यकर्ताओं को धन्यवाद। 22 जनवरी, 2023 का दिन अयोध्या के राममंदिर में रामलला को विराजमान करने का घोषित किया जा चुका है। हिन्दु धर्ममावलम्बी इस दिन की उत्साह से प्रतिक्षा कर रहे हैं।

श्री कुमावत क्षत्रिय महिला विकास संस्था जयपुर द्वारा

'शरद महोत्सव रास-घूमर' का आयोजन

कार्यक्रम में जमकर झूमीं महिलाएं

गुलाबी नगरी के समृद्ध भक्तिमय और गौरवशाली इतिहास को संजोयें राजस्थानी घूमर नृत्य को पहचान दिलाने के उद्देश्य से श्री कुमावत क्षत्रिय महिला विकास संस्था, जयपुर द्वारा 'शरद महोत्सव, रास घूमर' का आयोजन श्याम नगर स्थित सामुदायिक केन्द्र, जयपुर में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि चेतन कुमावत, अतिथि श्रीराम नीमीवाल, श्रीमती कृष्णा बड़ीवाल व श्री अशोक कुमावत द्वारा दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का आगाज किया गया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पुरूष महिलायें और बच्चे पारम्परिक वेशभूषा में नजर आये। कार्यक्रम में आदर्श नगर से आये ग्रुप ने **नैना रा लोभी**, बापू नगर से **घूमर रमवा न जास्या**, विद्युत नगर से **गजबन गोरी बनी ठणी**, झोटवाडा से **दे ग्यो कागज पोस्टमैन** गानों पर अपनी प्रस्तुतियां देकर दर्शकों की खूब तालियां बटोरी। इसके बाद श्री कुमावत क्षत्रिय महिला विकास संस्था अध्यक्ष सुनीता नान्दीवाल व कार्यकारिणी द्वारा **श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी व मेरो मन है गयो लटा पटा...** ने दर्शकों को उत्साहित और आनंदित कर दिया। प्रथम बापू नगर ग्रुप, द्वितीय आदर्श नगर ग्रुप, तृतीय झोटवाडा ग्रुप व विद्युत नगर ग्रुप को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। मंच संचालन भारती तोंदवाल ने किया।

मुख्य अतिथि चेतन कुमावत ने कहा कि भारतीय संस्कृति और भारतीय धरोहर काफी खूबसूरत है। चाहे वह राजस्थानी घूमर नृत्य हो या गुजरात का रास गरबा अपनी इन्हीं धरोहरों के कारण भारत पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। परंपरा और लालित्य के उत्सव के रूप में, घूमर दर्शकों को मंत्रमुग्ध करता है और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाता है। यह मनमोहक नृत्य शैली यह सुनिश्चित करती है कि राजस्थान की विरासत की भावना और गरिमा बनी रहे और आने वाली पीढ़ियों को मंत्रमुग्ध करती रहे।

संस्था की वरिष्ठ संरक्षिका उमा माचीवाल ने कहा कि घूमर नृत्य आज के आधुनिक, कानफोड़ू व हाईटेक मनोरंजन की चमक-दमक के आगे इतिहास के पन्नों में स्थान लेता जा रहा है। घूमर नृत्य एक सुंदर नृत्य शैली है। बॉलीवुड भी इस लोक नृत्य को बड़े पर्दे पर प्रस्तुत करने में गर्व महसूस करता है। राजस्थानी भाषा, लोक नृत्यों, साहित्य और संस्कारों को एक अलग पहचान दिलाने के लिए इस शरद महोत्सव, रास-घूमर का आयोजन किया जा रहा है।

अध्यक्षा सुनीता नान्दीवाल ने कहा कि यह बढ़ता हुआ कदम राजस्थानी सभ्यता और संस्कृति को गौरान्वित करने का प्रयास है। शरद महोत्सव, रास-घूमर के माध्यम से इस भव्य सांस्कृतिक धरोहर को पहचान दिलाने की कोशिश की जाती रही है।

इस अवसर पर कृष्णा बड़ीवाल, राजेश धुंधारिया, राजेश कुमावत पार्षद, सी.एम.बड़ीवाल, रमेश गैदर, पिन्नू कारगवाल, जयसिंह कुमावत, स्नेहप्रभा कुमावत, मूलचंद खोवाल, मीना कुमावत, सुरेंद्र मारोठिया, रमेश तोंदवाल सहित कई समाज के गणमान्य व वरिष्ठ लोग मौजूद रहे।

सभी अतिथियों एवं गणमान्य लोगों ने इस कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम समाज में होते रहना चाहिए। इससे महिला जाग्रति को बल मिलता है।

दोस्ती आम है लेकिन ऐ दोस्त,
दोस्त मिलता है बडी मुश्किल से।

जयपुर से चलकर आने वाली ट्रेन सुबह 5 बजे प्रयागराज पहुंचती है। हमारे बी-5 कोच के सामने मेरे मित्र अरूण कुमार स्वागत के लिये तैयार मिले। घर पहुंच कर नास्ता किया फिर प्रातः 7 बजे ही गंगा-यमुना के संगम स्थल पर स्नान हेतु पहुंचकर संगम में सपत्नीक डुबकी लगाई। वहां जल का अर्ध्य दिया व दुग्धाभिषेक किया।

यहां संगम स्थल पर हर वर्ष माघ के महीने में एक माह तक माघ मेला लगता है। भारत के विभिन्न स्थानों से आये हुये लोग यहां एक माह तक कल्पवास करते हैं। प्रशासन द्वारा गंगा-यमुना व संगम के आस-पास मेला क्षेत्र में व्यवस्थित तरीके से टेन्ट लगाये जाते हैं। पूरे एक महीने तक लोग यहां रहते है। तीर्थ स्नान करते है। जप,तप,हवन व पूजा पाठ करते है, खुद का बनाया हुआ भोजन करते है, किसी से कुछ लेते नहीं है व दान करते है। हमारे साथी जे.पी. मिश्रा भी यहां कल्पवास करने आये हुये है। हम संगम से सीधे गंगा तट पर तुलसी मार्ग स्थित मिश्रा जी के टेन्ट में पहुंचे। मिश्राजी व उनकी धर्मपत्नी साथ-साथ कल्पवास कर रहे थे, यहां आने पर हमें भी कल्पवासी होने की अनुभूति हुई। वापस घर आकर दोपहर का भोजन किया।

अगले दिन प्रयागराज भ्रमण का कार्यक्रम बनाना था। मेरे पुत्र मनीष ने प्रयागराज के 10 प्रमुख दर्शनीय स्थलों की लिस्ट गूगल से ढूंढकर भेज दी थी। अरूण ने रूट के अनुसार क्र म सेट कर लिया। प्रातः ही ''श्री अलोप शंकरी शक्तिपीठ मंदिर'' में दर्शन किये। यहां कोई मूर्ति स्थापित नहीं है। गर्भ गृह में छत से लटकते हुये झूले में देवी की पूजा होती है। यहां का प्रबंधन श्री पंचायती अखाडा महानिर्वाणी, दारागंज प्रयाग द्वारा किया जाता है।

...शेष पृष्ठ 15 पर

श्रीमती भारती वर्मा

शिक्षिका के द्वारा राज्य सेवा सफलतापूर्वक
पूर्ण कर ऐच्छिक सेवानिवृत्ति लेने पर

हार्दिक बधाई

एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना

शुभेच्छु

श्रीमती विद्या-स्व. भवानी शंकर तोंदवाल (सास-ससुर) रमेश तोंदवाल (पति),
श्रीमती कृति-आभास एवं श्रीमती रेणुका-अभिनंदन (पुत्रवधू-पुत्र)
एवं समस्त तोंदवाल परिवार

विज्ञापन

60, जय जवान कॉलोनी-द्वितीय, टोंक रोड, जयपुर मो. 94608 70125

बूंदी में श्रीराम की शोभायात्रा निकाली व प्रतिभाओं को सम्मानित किया

राजस्थान कुमावत युवा शक्ति, बूंदी की ओर से 24 अक्टूबर, 2023 को बड़े ही उल्लास से भगवान श्रीराम की शोभायात्रा कुमावत समाजबंधुओं द्वारा पूजा-अर्चना करके बैण्ड बाजे के साथ निकाली जो कुमावत धर्मशाला पहुंची। शोभायात्रा में श्रीराम-सीता तथा शिव-पार्वती की झांकियां थीं तथा महिलाएं कलश लेकर चल रही थीं। मार्ग में अनेक जगहों पर शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया गया।

इसके बाद प्रतिभा सम्मान समारोह में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर पदक प्राप्त खिलाड़ियों व प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सर्वकुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामेश्वर बम्बोरिया एवं श्री ललित जालवाल तथा विशिष्ठ अतिथिगण जयनारायण जूनवाल थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान कुमावत युवा शक्ति के प्रदेश अध्यक्ष रतन नगरिया ने की। सर्वश्री भंवरलाल उदयवाल, दिनेश, घनश्याम दंबीवाल, चंदू चश्मेवाले, महिन्द्र सिरोहा, हजारीलाल, जगदीश, बिशनाराम, बद्री व मोहन आदि गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

रवीना तोंदवाल जिलाध्यक्ष निर्वाचित : उक्त कार्यक्रम में कुमावत महिला मण्डल बूंदी का गठन किया गया तथा रवीना तोंदवाल को जिलाध्यक्ष बनाया गया। श्रीमती रवीना तोंदवाल को जिलाध्यक्ष बनाए जाने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

रतनी कुमावत भारतीय मानव अधिकार सहकार ट्रस्ट महिला तहसील अध्यक्ष मनोनीत

चित्तौड़गढ़। भारतीय मानव अधिकार सहकार ट्रस्ट द्वारा सुश्री रतनी कुमावत को चित्तौड़गढ़ तहसील की महिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

सुश्री कुमावत को भ्रष्टाचार, महिला उत्पीड़न, ग्लोबल वर्किंग, बाल विवाह, गो-रक्षा व मानव हितों से जुड़े मामलों पर कार्यवाही करने, इनसे जुडे अपराधों की निगरानी करने का दायित्व सौंपा गया है। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से सुश्री रतनी कुमावत को हार्दिक बधाई।

राजकुमारी कुमावत महिला गोल्फ टीम की कप्तान नियुक्त

गोवा में आयोजित 37वें नेशनल गेम्स के लिए मध्य प्रदेश मिनी गोल्फ एसोसिएशन ने राजकुमारी कुमावत को महिला टीम की कप्तान नियुक्त किया है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से राजकुमारी कुमावत को महिला टीम कप्तान बनाए जाने पर हार्दिक बधाई।

सामूहिक विवाह

17 अप्रेल 2024 रामनवमी को श्री कुमावत समाज सुधार व सेवा समिति, नावां द्वारा 16वां सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन श्री रघुवरदास महाराज की बगीची, राधाकृष्ण भगवान का मंदिर, नावां में आयोजित किए जाने की घोषणा की गई है।

गेट को लेकर विवाद से आशीष की हत्या पड़ौसी ही निकला हत्या कराने वाला

कुमावत बाड़ी, खातीपुरा, जयपुर के आशीष कुमावत की हत्या पड़ौसी रमेश मारवाल ने 25 अक्टूबर, 2023 को करवायी। प्रथम दृष्टया मोटरसाइकिल एक्सीडेन्ट का मामला लग रहा था। जब हत्या की आशंका बताई गई तो एक्सरे कराने पर शरीर में गोली मिली। पुलिस ने 50 पुलिसकर्मी लगाकर इसकी जांच कराई तो CCTV फुटेजों से 6 दिनों में ही इसकी गुत्थी सुलझ गई।

पुलिस ने कॉलडिटेल का एनालिसिस किया तो नावां के कुछ नम्बर संदिग्ध मिले। नावां में पुलिस टीम भेज कर रैकी कर तूफान और गिरधारी को पुलिस ने पकड़ लिया। जिनसे ज्ञात हुआ कि पड़ौसी रमेश मारवाल ने गेट के विवाद के चलते 2 लाख रुपये सुपारी देकर यह हत्या करवाई थी। पुलिस ने हथियार, कारतूस व बाईक बरामद कर इन्हें गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने भारतीय दण्ड संहिता की धारा 302, 120बी तथा आयुध अधिनियम के तहत अवैध हथियार रखने का प्रकरण भी इनके विरुद्ध दर्ज किया है। मृतक के 7 वर्ष का बच्चा तथा परिवार है जिसके जीवन यापन का प्रश्न भी खड़ा हो गया है।

इतनी सी बात से आशीष की जान चली गई तथा 3 युवक इस अपराध में लिप्त होने से अपना कैरियर तो खो बैठे तथा कारागार की सींखचों के भीतर रहने को मजबूर भी होंगे। यदि विवेक व शांति से काम लिया होता तो मामला ऐसा नहीं था कि सुलझ नहीं सकता था।

क्या जरूरी है शादी में दुल्हन का बेस या लहंगा तथा दुल्हे की महंगी शेरवानी ?

एक युवती की जिदंगी में उसकी शादी एक महत्वपूर्ण पल होता है। दुल्हन इस पल को यादगार बनाने के लिए चाहती है कि उसकी शादी का जोड़ा (बेस या लहंगा) सबसे खास हो, जो श्रृंगार का अहम हिस्सा भी होता है। वे दिन लद गये जब दुल्हन साड़ी पहनकर सात फेरे लेती थी। दुल्हनों की इस नब्ज को पहचाना शादी का जोड़ा बेचने वाले दुकानदारों ने। इन्होंने अपने बड़े-बड़े शोरूम बना लिए जहां पर शादी के जोड़ों का डिस्प्ले आकर्षक ढंग से किया जाता है। जो वहां खरीदने गया, समझो फंस गया। इन शोरूम्स पर बेस या लहंगों की कीमतें दुगनी-तिगुनी होती है। यदि होने वाली दुल्हन को वहां बेस या लहंगा पसंद कराने ले गये तो वह अधिक काम किये आकर्षक व महंगे बेस या लहंगा पहले दिखाते हैं जिनकी कीमत लाखों में होती है। फिर धीरे-धीरे कम रेंज वाले। ऐसे में कम काम व कीमत वाले बेस या लहंगा भला कैसे पसंद आयेगा। यदि अन्य शोरूम पर भी जाते हैं तो यही ट्रेंड मिलता है। ऐसे में शादी का महंगा जोड़ा (बेस या लहंगा) लेने के अतिरिक्त अन्य विकल्प नहीं रहता व दुल्हा-दुल्हन के परिवारजनों की असहज स्थिति बन जाती है।

अधिक काम वाला महंगा व आकर्षक बेस या लहंगा सिर्फ स्वयं की शादी में पहन लिया जाता है और फिर अलमारी में बंद हो जाता है। क्योंकि निकट रिश्तेदारों की शादी का इंतजार रहता है। जब ऐसा मौका आता है तो भारी भरकम बेस सम्भालना मुश्किल हो जाता है। अब जिस दुल्हन की शादी है तो उसके जोड़े से कहीं भारी काम का बेस रिश्तेदार महिला पहने मिलती है तो लोग उसकी तुलना करने लगते हैं इससे स्थिति असहज बन जाती है। तो ऐसा बेस या लहंगा खरीदो जो अन्य अवसरों पर पहनने में दिक्कत नहीं हो।

अब बात आती है कि क्या शादी में दुल्हन का बेस या लहंगा जरूरी है ? डिजाइनर महंगा बेस या लहंगा पहनना दुल्हन के लिए आवश्यक नहीं है, पर यह निर्णय करना दुल्हन व परिजनों पर निर्भर है। अनेक शादियां ऐसी भी होती हैं जिन्हें दुल्हनों ने अच्छी साड़ी पहनी है जिनमें अमीर व गरीब परिवार दोनों शामिल है। उन्होंने अपनी परम्पराओं तथा सादगी को महत्व दिया था। उदाहरण के तौर पर विद्या बालन, दिया मिर्जा, एश्वर्या रॉय, मोनी रॉय, दीपिका पादुकोण, काजोल, पत्रलेखा, यामी गौतम आदि अभिनेत्रियों ने अपनी शादी में साड़ी पहनी। क्या ये अभिनेत्रियां महंगे बेस या लहंगा खरीदने में समर्थ नहीं थी ? इसलिए चकाचौंध से बचें तथा देखा-देखी करके महंगे बेस या लहंगा लेने के बजाए उचित बजट वाले शादी के जोड़े या अच्छी साड़ी पहनकर फेरे लें। भला ऐसी चीज क्यों लें जिसका असानी से उपयोग बाद में न कर सकें।

दुल्हे की शेरवानी : अब बात आती है दुल्हे की शेरवानी की। देखा जाए तो यह मुगलों की पोशाक रही है। पर भारतीय दुल्हों ने भी इसे अपना ही लिया। आजकल इनके भी बड़े-बड़े शोरूम खुल गये हैं जहां शेरवानी की कीमत हजारों में होती है, यदि मामूली सी भी विशेषता इसमें और जोड़ दें तो फिर यह दुगनी-तिगुनी दरों पर मिलती है। इसलिए एक दिन के शौक के लिए इस मद पर ज्यादा पैसा बर्बाद करना कहां तक उचित है ? ग्रीष्म ऋतु के सावों में 'एक तो गर्मी ओर उस पर शेरवानी' पहनने से दुल्हा असहज हो जाता है। तो क्यों नहीं इसके विकल्प 'डिजायनर कुर्ता' पहनने पर सोचा जाये, जो हल्का होता है व अधिक कीमत का नहीं होता। फिर इसे बाद में अच्छे समारोहों में भी पहना जा सकता है।

अत: परम्परा तथा देखादेखी की होड़ से बाहर निकलना ही श्रेयस्कर है। हमें ऐसे कपड़े लेने चाहिये जिसे पहनने से शरीर को आराम मिले व आर्थिक भार भी ज्यादा न हो।

सूचना का ज्ञान

सूचना के ज्ञान (Knowledge of Information) से हम चतुर तो बन सकते है, परन्तु बुद्धिमान नहीं। सूचना के ज्ञान पर आधारित शिक्षा पद्धति से यह आम समस्या है। हमारे पास सूचना का भंडार बहुत बढ़ गया है। अत:हम दूसरों को शिक्षा देने में बहुत माहिर हो रहे है, यानि चतुर हो रहे हैं पर वह ज्ञान स्वयं के जीवन में उतारने में प्राय: असफल हो जाते है। ऐसा ज्ञान हमारे चेतन मन (Conscious Mind) तक सीमित रहता है तथा अवचेतन मन (Sub-Conscious Mind) की Programming को बदलने में असमर्थ रहता है। स्वयं को बदलने वाला ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है। जिस पल इस बात का भान हमें हो जाता है उसी पल से हमारे बुद्धिमान होने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

- सुखराम सिंघाटिया

अपनों के साथ रहो हमेशा

रिश्तों से पीछा छुड़ाते छुड़ाते, एक दिन खुद रिश्ते आपसे पीछा छुड़ा लेते है। पैसा तो बहुत होता है आप के पास, पर प्यार से गले लगाने वाला कोई नहीं होता। कंधे पे हाथ रख के, 'मैं हूँ ना', बोलने वाला कोई नहीं होता है। इसलिए कभी कभी अपने सिद्धांतों को एक तरफ रख के, सब में घुलमिल जाया करो। हो सकता है किस्मत ने कुछ खास पल लिख रखें हो आप की किस्मत में। इसलिए सदा अपनों के साथ रहो।

सम्बन्ध कोई भी हो लेकिन यदि दु:ख में साथ न दे अपना।
फिर सुख में उन संबंधों का रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

- रामधारी सिंह दिनकर

जयपुर शहर

जयपुर की स्थापना में कुमावत समाज के कारीगरों एवं मिस्त्रियों का योगदान रहा, क्योंकि पहले भवन निर्माण केवल कुमावत जाति के द्वारा ही किया जाता था। इस सुन्दर शहर को भविष्य के 500 सालों की जरूरत के अनुसार दूरदर्शितापूर्वक किया गया तथा निर्माण ऐसा किया कि तत्कालीन महल व इमारतें देश-विदेश से पर्यटक देखने आते हैं।

ढूंढाड़ के प्राचीन गढ़, किले और हवेलियां गर्मी में ठंडी और सर्दी में गरम रहती है। इनका निर्माण इतने अच्छे सलीके से किया गया की बरसात के पानी का इनमें प्रवेश ही नहीं हो सकता था। इस कारण भवनों में आज तक सीलन नहीं आई।

जयपुर की इमारतों के अलावा दीवारों और परकोटे पर किया गया रंग-रोगन कभी फीका नहीं पड़ता। उस जमाने में आज की तरह हर साल परकोटा और हवेलियों पर रंग रोगन कराने की जरूरत ही नहीं पड़ती थी।

जयपुर अर्ध मरुस्थली धरती पर बसा है। नवग्रह के हिसाब से नौ वर्ग मील में बने परकोटे की चौड़ी दीवार में चूने के साथ करीब बीस प्रतिशत काली मिट्टी का मिश्रण किया गया। **लाल सुर्खी और कली को बैलों के घरहट से पीस कर बनाए चूने का प्लास्टर किया जाता। यह प्लास्टर 296 साल के बाद भी नहीं उखड़ा और चार दिवारी आज भी पहले की तरह सीना ताने खड़ी है।**

जयपुर इतिहास के जानकार देवेंद्र भगत के मुताबिक दीवारों में तालाब की काली मिट्टी का गारा पत्थर के साथ मिलाने से इनकी जड़े चूने की पकड़ जैसी मजबूत की गई। बिना पट्टियों के **चूने और कंकरों को मिलाकर बनाई लदाव की छते** आज भी इतनी मजबूत है कि इनमें सीलन नहीं आई।

छत पर फर्श पर दाना मैथी, गुड़ और मुल्तानी मिट्टी मिले पाउडर के मिश्रण को कली चूनें में मिलाकर लेपन किया जाता। कभी कली के भट्टे बहुत थे। मिट्टी के लड्डू बना उन्हें आग में पका कर खोर बनाई जाती। खोर को घरहट में पीस चूना बनाया जाता।

आमागढ़ पहाड़ के पत्थर से ही जयपुर बसा है। यह पत्थर नमी को सौंखता है। कई इमारतों में **चूने के साथ शीशे का घोल का मिश्रण** कर मजबूती दी गई है। महाराजा कॉलेज आदि में चौकोर पत्थर के चारों तरफ चूने का ऐसा मजबूत लेप किया गया जिससे दीवार में पानी नहीं पहुंच सकता। आगे पीछे झरोखे और बरामदे बनाने से मकान में सीलन नहीं पहुंचती थी।

पीली मिट्टी और घरहट का चूना मिलाकर रामरज रंग बनाया जाता। यह रंग बरसों तक खराब नहीं होता। यह रंग सीलन को अन्दर जाने से रोकता। मोटी दीवारों के बीच मिट्टी के मिश्रण की तकनीक के बारे में कवियों ने कहा था, कि—

''जयपुर शहर नगीना, अंदर मिट्टी ऊपर चूना।''

दीवारे मोटी और ऊंची छतें होने से महलनुमा कमरे हर मौसम के अनुकूल बने रहते। प्रवेश द्वार पर बनी **ड्योडी** तो हर तरह के मौसम का मकान पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ने देती। **हवेली के बीच खुला चौक** होता जिससे कमरों में शुद्ध हवा रोशनी आती रहती। मकान के चारों तरफ **छज्जेनुमा मुंडेर** बौछारों से मकान को बचाती।

हवेली और इमारत के बाहर चबूतरे बनाने से बरसात का पानी नीव में नहीं जाता।

ऊपरी की मंजिल पर बने महल जैसे कमरों के बाहर कटाईदार छज्जों का बरामदा होता। ऊपर के कमरे के बाहर चांदनी भी बनाई जाती।

जयपुर में आज भी अनेक पुरानी हवेलियां हैं जिनमें ऐसी चांदनी मौजूद है। दरवाजे के ऊपर **चंद्राकर खिड़कियां** होती। उनमें लाल पीले हरे कांच लगाए जाते। यह रंगीन कांच सूर्य की तेज रोशनी को कमरे में आने नहीं देते। झरोखों का निर्माण बड़े सुंदर ढंग से जयपुर की वास्तु कला के अनुरुप हुआ।

- जितेन्द्र सिंह शेखावत
वरिष्ठ पत्रकार व इतिहासकार

प्राचीन मूल्यों का महत्व और हमारा समाज-2

पिछले अंक में हमने हमारे उन प्राचीनतम मूल्य की चर्चा की थी जो आज भी एक समाज को अग्रणी समाज बनाने के लिए प्रासंगिक है। उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए, आज हम कुछ ऐसे मूल्यों की चर्चा करेंगे जो हमारे व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ हमें एक आदर्श सामाजिक नागरिक भी बनाते हैं। व्यक्ति समाज की इकाई होता है। व्यक्ति का विकास समाज का विकास होता है। हम अपने कुमावत समाज को, जो वैसे भी एक शांतिप्रिय समाज माना जाता है एक अग्रणी, विकसित, समृद्ध समाज बनाने का स्वप्न देखते हैं तो उसके लिए शुभारंभ हमें खुद से ही करना होगा। हम अपने आप को एक आदर्श की तरह स्थापित करेंगे तब ही हमारी आने वाली पीढ़ी भी हमारे मार्ग का अनुसरण करेगी और इस तरह उसके बाद आने वाली पीढ़ी। सोशल इंजीनियरिंग का यह सकारात्मक पहलू होता है। जिसमें हम एक विचार से पूरे समाज को प्रभावित कर उसकी मानसिकता को पूरी तरह परिवर्तित कर देते हैं। उदाहरण के लिए एक आलसी व्यक्ति को यदि कर्मठ बनाना है ,तो सिर्फ प्रतिदिन उसे बोलने से कि 'काम करो, काम करो' वह कर्मठ नहीं बनेगा। लेकिन हां यदि हम समस्या के कारण पर काम करें और वहां से एक माहौल बनाने लगे कि 'कर्मठता ही जीवन है' तो शायद उस आलसी व्यक्ति की सोच में परिवर्तन आने लगे। व्यक्ति पर नहीं, उसकी सोच पर प्रहार करना आवश्यक है। तो आइए, कुछ ऐसे ही सोच परिवर्तित करने वाले हमारे पुराने शास्त्रीय मूल्यों की विवेचना को आगे बढ़ाते हैं। पिछली बार हमने स्वावलंबन, उत्तराधिकारी निर्धारण, कैवल्य ज्ञानम अहिंसा परमो धर्म और अनर्थ दंड त्याग व्रत इन पांच प्राचीन मूल्यों को समझा था। अब आगे-

परस्परोपग्रहो जीवानाम : इस प्राचीन दर्शन का अर्थ है ,सभी जीव एक दूसरे पर आश्रित है। अर्थात सभी जीव एक दूसरे के प्रति सहायक या सेवक की भूमिका में है। सभी धर्म में कुछ संस्कार ऐसे हैं जो दिखने में छोटे लगते हैं लेकिन उनके पीछे बहुत बड़ी सोच छिपी होती है। जैसे कबूतरों को दाना डालना, गाय और कुत्ते को रोटी देना यह छोटी-छोटी बातें हम सभी की दिनचर्या में शामिल है। लेकिन यह हमें अपने प्रकृति के सभी प्राणियों का ध्यान रखने का संदेश भी देती है। यह 'मैं' की भावना का त्याग कर 'हम' की भावना सिखाती है। जब व्यक्ति प्रत्येक वस्तु को 'हम' के दृष्टिकोण से देखने लगता है तो अपने-आप समाज के विकास की गाड़ी अपनी गति पकड़ लेती है। कल्पना कीजिए एक कुमावत व्यापारी ने अपना बिजनेस स्थापित किया। तो दूसरे कुमावत बंधु ने जो सरकारी कार्यालय में था, उसकी कागजी कार्यवाही में मदद की। वही तीसरे कुमावत बंधु ने जो आर्थिक रूप से मजबूत था उसकी कर्ज चुकाने मदद की वहीं उस व्यापारी ने अपने नए बिजनेस में निर्धन कुमावत बेरोजगारों को नियुक्ति दी। अर्थात 'समाज प्रथम' की विचारधारा का अनुसरण कर हम अपने समाज कल्याण की परंपरा को आगे बढ़ा सकते हैं। जितने भी समृद्ध समाज है, सभी में कम्युनिटी वेलफेयर को सर्वोपरि रखा जाता है। वहां किसी कार्य के लिए धनराशि मिनटों में एकत्र हो जाती है। समाज बंधु जब तक एक दूसरे के पैर खींच गिराने के स्थान पर एक दूसरे को हाथ पकड़ ऊपर खींचने का कार्य नहीं करेंगे, समाज का विकास संभव नहीं है। हमेशा याद रखना चाहिए कि

दरिया बनकर किसी को डूबाने से बेहतर है।
की जरिया बनकर किसी को बचाया जाएँ।।

सत्य अणुव्रत : हम बचपन से सीखते हैं कि सदा सत्य बोलना चाहिए, चोरी नहीं करनी चाहिए, ईमानदारी से कार्य करना चाहिए। यह ऐसे मूल्य है जिनके ऊपर एक ईमानदार, सत्यनिष्ठ समाज की आधारशिला रखी जाती है। हमें लगता है व्यवहारिक जीवन में यह सब संभव नहीं है। परंतु ऐसा नहीं है यदि हम बचपन से ही सत्य को एक व्रत की तरह धारण करें और अपने बच्चों को कराएं तो वह स्पष्टवादी, पारदर्शी, ईमानदार और सत्यवादी नागरिक बनेंगे। इससे हमारा समाज एक विश्वसनीय समाज के रूप में उभरेगा। जब हम दुनिया को विश्वास देते हैं तभी हमें विश्वास मिलता है। बाजार में एक साख बनती है। समाज का नाम ऊंचा होता है। यह कठिन है, परंतु मुश्किल नहीं ।

लगा ले जोर दुनिया अब, मेरे खिलाफ हो जाए
ठान ली हैं मैंने, मुझे ईमानदार होना है।
रास्ता कठिन है, माना मैंने
पर किसी को तो दुनिया में समझदार होना है।।

अनेकांतवाद: इसका अर्थ है कि हर चीज को समझने के अनेक अंत हो सकते हैं। अर्थात हर बात को देखने के अनेक अंत होते हैं। उदाहरण के लिए एक पेंटर ने एक तस्वीर बनाई। उसे एक व्यक्ति ने एक तरफ से देखा और कहा यह तो लाल रंग से बनाई गई है। दूसरे व्यक्ति ने दूसरी तरफ से देखा और कहा कि नहीं यह तो पीले रंग से बनाई गई है। दोनों में बहस होने लगी तब महावीर स्वामी वहां से गुजरे उन्होंने कहा कि यह तस्वीर आपकी तरफ से लाल है और आपकी तरफ से पीली है। एक ही चीज को देखने का सबका अपना-अपना नजरिया होता है। इस पर हमें फिजूल की बहस में नहीं पड़ना चाहिए। आज हम समाज में देखते हैं कि आपसी मामूली सा वाद-विवाद भी एक बड़े झगड़े का रूप धारण कर लेता है। यदि हम अनेकांतवाद को मानने लगे तो समाज की सूरत ही बदल जाए। अनेकांतवाद कहता है कि "you are right is right (तुम सही हो ,यह ठीक है) but only you are right is wrong (लेकिन, सिर्फ तुम ही सही हो यह गलत है)। हम सामने वाले के दृष्टिकोण को भी सम्मान दे, तो अनावश्यक वाद-विवाद और बहस से बच सकते हैं। आज प्रत्येक समाज में वैवाहिक बंधन शिथिल हो रहे हैं। तलाक की दर बढ़ती जा रही है। प्रत्येक मतभेद का एक ही कारण होता है, 'मैं सही, तुम गलत'। यदि इसके बदले हम दूसरे के नजरिए को समझें और बात को वहीं छोड़कर आगे बढ़ जाए, let go कर दें तो कितने ही रिश्ते टूटने से बच जाए। कई विकसित समाज है, जो छोड़ो, आगे बढ़ो, खत्म करो के सिद्धांत पर काम करते हैं और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।

जिंदगी का यह हुनर भी आजमाना चाहिए।
जंग अगर दोस्तों से हो तो हार जाना चाहिए।।

अत: प्राचीन मूल्यों और संस्कारों को अपनाकर हम अपने सपनों का समाज बना सकते हैं।

– **डॉ. प्रिया मारवाल,** एसोसियेटेड प्रोफेसर

अपच, गैस और पेट फूलने का निदान करती है मूली की चटनी

अधिकांश लोग मूली को सलाद के तौर पर खाते हैं। मूली से आने वाली गंध के कारण इसे कई लोग नही खाते। मूली पोषण तत्वों से भरपूर होती है। मूली की चटनी और पराठे का स्वाद भी लाजवाब होता है। मूली के पराठे तो सर्दियों का बेहतरीन नाश्ता होता है। मूली में फाइबर और प्रोटीन के साथ आयरन, कैल्शियम, पोटैशियम और मैंगनीज अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं। इसमें इम्युनिटी को मजबूत बनाने के लिए विटामिन-सी भी होता है। मूली के सेवन से पेट संबंधी सारी समस्याओं को दूर रखा जा सकता है, जैसे पेट फूलना, गैस की परेशानी व अपच नहीं होती। इसे खाने से अनेक संक्रामक रोगों से बचे रह सकते हैं। इसकी पत्तियों में भी फाइबर, इम्यून सिस्टम को दुरुस्त बनाने वाले और बॉडी को डिटॉक्स करने वाले गुण मौजूद होते हैं इसलिए मूली की चटनी अपनी डाइट में शामिल करना ठीक है।

मूली की चटनी की रेसिपी बनाने का तरीकाः 1/2 मूली, 1-2 मूली के पत्ते, 2 हरी मिर्च, 1 टमाटर, 5 लहसुन की कलियां, 1/2 इंच अदरक का टुकड़ा, थोडा सा धनिये की पत्तियां, 1/2 नींबू का टुकड़ा, नमक स्वादानुसार, 1/2 चम्मच हींग, 1 टीस्पून काला नमक, 1/4 कप पानी

ऐसे बनाएं चटनी

- मूली को छीलकर व धोकर इसके टुकड़े कर लें।
- मिक्सी में कटी मूली, इसके पत्ते, नमक, काला नमक, अदरक, लहसुन, धनिया की पत्ती, नींबू का रस, हींग और थोड़ा सा पानी भी डाले।
- इन सभी का पेस्ट बना लें।

तैयार है एकदम टेस्टी मूली की चटनी। इसे आप रोटी व चावल के साथ साइड में सर्व कर सकते हैं। इसे खाने से पेट सम्बन्धी सभी रोगों से बचाव जा जाता है। **-शोभिका कुमावत**

भावी पीढ़ी के लिए पेड़ लगाइये

हमारे जीवन में पेड का कितना महत्व है, यह हम इस लेख में जानेंगे। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई ने हमारे पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ने का काम किया है। 50 वर्ष पूर्व जितनी हरियाली पहाड़ों व मैदानों में थी वह आज नगण्य है, ऐसा विश्वभर में हो रहा है। मानव ने निर्माण व विकास के नाम पर घर, दफ्तर, कारखाने तो बना लिए किन्तु खनन व इमारती लकड़ी की जरूरत ने पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाने में जरा भी नहीं सोचा। परिणामतः आज पारिस्थतिकी संतुलन बिगड़ गया। पृथ्वी दिन-प्रतिदिन गर्म हो रही है, हिमाचल जैसी चोटियां जहां बर्फ रहती थी तथा अटार्कटिका जैसे बर्फीले महाद्वीप से अब बर्फ पिघल रही है। यह अच्छा संकेत नहीं है।

अब अत्यधिक गर्मी या सर्दी होने लगी वहीं बरसात ने भी पहाड़ी राज्यों व मैदानों में अपना रोद्र रूप दर्शाया है। भारत ही नहीं अपितु चीन, पाकिस्तान, यूरोपीय देश अमेरिका जैसे देशों में बाढ़ ने जनजीवन बुरी तरह प्रभावित किया है। जानमाल के नुकसान की तो सीमा ही नहीं रही। अतिक्रमण ने इस नुकसान को और बढ़ाने का काम किया।

अतः हमें पेड़ लगाकर पर्यावरण को संरक्षित करने पर सामाजिक, शासकीय स्तर पर सोचना ही होगा। अगर पर्यावरण बचेता तो हम बचेंगे। अन्यथा आगामी पीढ़ियों को हम क्या देकर जायेंगे? हमने जो विकास किया उसका क्या फायदा होगा? पेड़ों का महत्व इससे स्पष्ट होता है कि एक पेड़—

- एक वर्ष में 700 किग्रा आक्सीजन का उत्सर्जन करता है, जो हमारी प्राणवायु है।
- एक वर्ष में 20 टन कार्बनडाईआक्साइड को सोखता है जो हानिकारक गैस होती है।
- एक वर्ष में 1 लाख वर्ग मीटर वायु को साफ करता है।
- एक वर्ष में 80 किग्रा पारा, लीथियम, लेड जैसी जहरीली धातुओं के मिश्रण को सोखता है।
- एक वर्ष में 20 किग्रा धूल सोखता है तथा ध्वनी/शोर (प्रदूषण) रोकने का कार्य करता है।
- मिट्टी के कटाव को रोकने का कार्य करता है, चाहे वह हवा से हो या पानी से। इससे उपजाऊ मिट्टी बच जाती है तथा बाढ़ आदि से बचाव होता है।
- गर्मी के दिनों में एक पेड के नीचे लगभग 4 डिग्री तापमान कम पाया जाता है।
- जहां पेड़ व जंगल होते हैं वहां वर्षा ठीक होती है तथा सूखा व अकाल नहीं पड़ता।

जब इस पृथ्वी पर पेड़ पर्याप्त मात्रा में होंगे तो धरती का तापमान नियंत्रित रहेगा ओर इसके दुष्प्रभावों से बचा जा सकेगा।

आईये हम सब पेड़ लगायें तथा इस धरती को हरा-भरा बनाकर स्वर्ग बनायें। अन्यथा इस वर्ष उत्तराखण्ड, हिमाचल व सिक्कम में तेज वर्षा, बाढ़ व पहाड़ दरकने की जैसी घटनाएं हुईं और सम्पत्ति की व जनजाति हुई वैसी घटनाएं होने की और आशंका है।

बुजुर्ग नहीं भाग्यशाली लोग

वे भाग्यशाली लोग हैं जो 60 पार कर गये। एक जापानी पुस्तक के अनुसार जापान में, डॉ. वाडा 60 साल से अधिक उम्र के लोगों को, 'बुजुर्ग' कहने के बजाय, 'भाग्यशाली लोग' कहने की वकालत करते हैं।

डॉ. वाडा ने 60 साल के लोगों के 'भाग्यशाली व्यक्ति' बनने के रहस्य को '36 वाक्यों' में इस प्रकार समझाया :-

1. चलते रहो।
2. जब आप चिड़चिड़ा महसूस करें तो गहरी सांस लें।
3. व्यायाम करें, ताकि शरीर में अकड़न महसूस न हो।
4. गर्मियों में, एयर-कंडीशनर चालू होने पर, अधिक पानी पिएं।
5. आप जितना चबाएंगे, आपका शरीर और मस्तिष्क उतना ही ऊर्जावान होगा।
6. याददाश्त उम्र के कारण नहीं, बल्कि लंबे समय तक मस्तिष्क का उपयोग न करने के कारण कम होती है।
7. ज्यादा दवाइयां लेने की जरूरत नहीं है।
8. रक्तचाप और रक्त शर्करा के स्तर को जानबूझ कर कम करने की आवश्यकता नहीं है।
9. केवल वही काम करें, जिससे आप प्यार करते हैं।
10. चाहे कुछ भी हो जाए, हर समय घर में नहीं रहना चाहिए। रोज घर से बाहर जरूर निकलें, और टहलें भी।
11. जो चाहो खाओ, पर स्वयं की नियन्त्रित रखिये।
12. हर काम सावधानी से करें।
13. उन लोगों से वह व्यवहार न करें, जिससे आप भी नापसंद करते हैं।
14. अपनों का ख्याल रखें।
15. बीमारी से, अंत तक लड़ने के बजाय इसके साथ जीना बेहतर है।
16. मुश्किल समय में, आगे बढ़ने से मदद मिलती है।
17. हर बार, खाना खाने के बाद, थोड़ा सा गुनगुना पानी, अवश्य पियें।
18. रात में, जब भी उठें, पानी अवश्य पियें।
19. जब नींद नहीं आये, तो जबरदस्ती न करें।
20. खुशमिजाज चीजें करना, दिमाग को तेज करने वाली सबसे अच्छी गतिविधि है।
21. अपने लोगों से बातचीत करते रहें।
22. एक 'पारिवारिक चिकित्सक' को, अपने आसपास जल्दी खोज लें ।
23. धैर्य रखें, लेकिन अत्यधिक नहीं, या हर समय अपने आप को अच्छा बनने के लिए मजबूर न करें।
24. नया सीखते रहें, वरना बूढ़े कहलाएंगे।
25. लालची मत बनो, अब जो कुछ भी तुम्हारे पास है, वही अच्छा व काफी है।
27. जब कभी बिस्तर से उठना हो, तो तुरंत खड़े न हों, 2-3 मिनट रुककर, उठें।
28. जितनी अधिक परेशानी वाली चीजें हैं, उतनी ही दिलचस्प हैं।
29. स्नान करने के बाद कपड़े पहनते वक्त दीवार आदि का सहारा लें या कुर्सी पर बैठकर पहने।
30. वही करें, जो अपने और दूसरों के लिए हितकारी हो।
31. अपने आज को, इत्मिनान से जिएं।
32. इच्छा, दीर्घायु का स्रोत है!
33. एक आशावादी के रूप में जियें।
34. प्रसन्नचित्त व्यक्ति, लोकप्रिय होंगे।
35. जीवन और जीवन के नियम आपके अपने हाथों में हैं।
36. इस उम्र में सब कुछ शांति से स्वीकार करे!

हँसते रहिये हंसाते रहिये, तंदुरुस्त रहिए।

बीस दिनां स्यूं भागादौड़ी,
सारो दिन ही काम काम।
पूजा हुगी, काम सलटग्यो
अब दिवाली रा राम राम।
साफ सफाई, रंगा पोती,
और घणांई ताम झाम।
पूजा हुगी, काम सलटग्यो,
अब दिवाली रा राम राम।
झाड़ा पूंछ्या, घर सजाया,
लाग्या रेया, सुबह शाम।
पूजा हूगी, काम सलटग्यो,
अब दिवाली रा राम राम।
लाडू चक्की काजू कतली
जलेबी भुजिया गुलाबजाम
पूजा हूगी , काम सलटग्यो,
अब दिवाली रा राम राम।
झिलमिल दीया फूलझड़ी
फटाकां री धूं धड़ाम
पूजा हूगी, काम सलटग्यो,
अब दिवाली रा राम राम।
छोटोड़ा ने घणी आसीस्यां
बड़ोड़ा ने करां प्रणाम
पूजा हूगी, काम सलटग्यो,
अब दिवाली रा राम राम घणे प्रेम स्यूं।

- राजेश खोरानिया, (कुमावत)

सर्दी का मौसम में खानदान

सर्दी के मौसम में हमारी पाचन शक्ति बहुत बढ़ जाती है। इसके कारण इस मौसम में खाया-पीया आसानी ये पच जाता है। इससे हमारे शरीर को पर्याप्त मात्रा में उचित व पौष्टिक तत्वों (खाद्य पदार्थों) के नहीं मिलने पर शरीर की धातुएं जलकर कम हो जाती हैं। इसलिए पौष्टिक तत्वों का सेवन करना जरूरी होता है। अन्यथा शरीर को नुकसान पहुंचता है। आजकल वजन नहीं बढ़ने देने व स्लीम (पतला) रहने की चाह में डायटिंग पर रहने की प्रवृत्ति के कारण शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन विटामिन युक्त खान पान नहीं लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों का शरीर व त्वचा कमजोर होकर नुकसान पहुंचता है। इस मौसम में जब गहरी ठंड शुरू हो जावे तब विशेष पौष्टिक तत्वों से युक्त खान पान का सेवन जरूरी होता है। इसकी कमी से शरीर में गैस की समस्या रहती है, इसे हम समझ नहीं पाते हैं। इस मौसम में कब्ज नहीं रहे यह विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस मौसम में खानपान में निम्न खाद्य पदार्थों का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है:-

रेशेदार अनाज : गेहूं, बाजरा, मक्का, जौ, रागी, सोयाबीन तथा अंकुरित अनाज। **दालें :** उड़द की दाल के पदार्थ तिल-मूंगफली व पुराना गुड़ से बने पदार्थ, **स्वास्थ्यवर्धक पदार्थ :** चव्यनप्राश, आंवला, सेब का मुरब्बा आदि। **सब्जियों में :** पालक, गोभी, पत्ता गोभी, हरे मटर, लौकी, गाजर, मूली, ककड़ी, खीरा, चकुंदर, लहसून, ब्रोकली, अदरक, नींबू आदि। **ताजा फलों में :** सेब, अनार, संतरा, चीकू, पपीता, पाइनेपल, कैला, मौसमी आदि अथवा इसका बिना शक्कर का जूस। **अन्य पदार्थ में :** दूध, घी, मिश्री, शहद, खजूर, टमाटर का सूप, नारियल पानी ग्रीन टी, ताजा दही (दोपहर को), सुबह अदरक, लोंग व तुलसी डालकर दूध की चाय आदि। **सूखे मेवों में :** बादाम, अखरोट, चिलगोजा, पिस्ता, अंजीर, खजूर, तालमखाना, 2 छुआरों को दूध में उबालकर पीना लाभदायक रहता है। **मसालों में :** विशेषकर सौंठ, लौंग, दाल चीनी, काली मिर्च, दाना मेथी, तेजपत्ता, जायफल आदि। इस मौसम में प्रात:काल सूरज उगने से पहले उठाकर निवृत्त होकर साफ हवा में सैर करना शरीर की क्षमता अनुसार व्यायाम व योगासन करना। कुछ समय के बाद शरीर की मालीश करके अथवा उबटन करके गुनगुने पानी से स्नान करना बहुत ही लाभदायक रहता है। दिन में एक बार सुबह की धूप में बैठकर धूप का सेवन करने से विटामिन डी के सेवन से हड्डियों को बहुत ही लाभ पहुंचता है।

निम्न वस्तुओं के सेवन से सर्दियों में बचना चाहिये:-रुखे, बासे, कड़वे, अधिक ठण्डी प्रकृति के तथा खटाई में इमली खट्टा दही, आम का अचार आदि का अधिक मात्रा में व नियमित सेवन नुकसान पहुंचाता है। इसी प्रकार से कफ बढ़ाने वाले पदार्थ जैसे दुग्ध के बने उत्पाद केक, पेस्ट्री बेकरी प्रोडक्ट, मैदा के उत्पाद, सफेद ब्रेड, अधिक मिर्च मसालेदार पदार्थ जंक व पुास्ट फुड्स, कोल्ड ड्रिंक्स व अधिक ठंडे पेय पदार्थ, अधिक चाय, काफी तथा बाजार में बिकने वाले ऐसे पदार्थ जो प्रिजरवेटिव व शर्करायुक्त डालकर बनाए जाते हैं। इनका सेवन स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है। देर तक जागना, सुबह देरी तक सोना, ठंड को सहन करना, देर तक भुख रहना, स्नान नहीं करना भी उचित नहीं रहता है।

त्वचा का रखें ध्यान

त्वचा हमारे शरीर के आंतरिक अंगों को ढक्कर बाहरी वातावरण से उनकी रक्षा करती है तथा शरीर के दूषित द्रव्यों को पसीने के माध्यम से बाहर निकालती है। शरीर के तापमान को नियंत्रित करती है एवं सूर्य की अल्ट्रावाइलेट किरणों से सुरक्षित रखती है। प्रात:काल में धूप के सेवन से विटामिन-डी का निर्माण होता है जो हड्डियों को मजबूती देता है। हम शरीर के इस महत्वपूर्ण अंग का ध्यान रखें, इसके लिए पोषण तत्वों का सेवन जरूरी है जिनमें ताजा फल, हरी व पत्तेदार सब्जियां, अंकुरित अनाज आदि जरूरी हैं। वहीं तेलीय पदार्थ, जंक व फास्ट फूड, मिर्च मसालों, चाय, काफी, कोल्ड ड्रिंक्स के सेवन तथा क्रीम, पाउडर, डियोड्रन्ट के अधिक प्रयोग से त्वचा खराब होती है।

त्वचा को ठीक रखने के लिए हमें फलों में संतरा, आंवला, पाइनेपल, स्ट्रावेरी, अमरूद, पपीता, जामुन, नीबूं आदि का सेवन करना ठीक है, इससे विटामिन सी मिलता है, जो त्वचा को लचीला व सुन्दर बनाता है। सब्जियों में गाजर, ब्रोकली, सलाद, पालक, ताजा फलियां, हरी सरसों, मेथी, बथुआ का सेवन करना चाहिये। अंकुरित अनाज का नियमित सेवन नाश्ते में करें। दही का सेवन भी त्वचा के लिए लाभदायक है।

अधिक मात्रा में मैदा, शक्कर, नमक, बेसन, डबलरोटी (ब्रेड), केक-पेस्ट्री, पास्ता का सेवन त्वचा के लिए हानिकारक होता है। गर्म पानी से स्नान करने पर त्वचा रूखी हो जाती है।

कैसे रखें त्वचा का ध्यान

- स्वच्छ जल का सेवन प्रतिदिन 8-10 ग्लास करना चाहिये, इससे त्वचा की नमी बनी रहती है।
- उबटन करें। आधा कटोरी जौ का आटा, एक चम्मच मलाई, आधा नींबू का रस व थोड़ा सा पानी मिलकर फेट लें। थोड़ी देर बाद इसे चेहरे व गर्दन पर मलकर 15 मिनट छोड़ दें। इसके बाद पानी से साफ कर लें, आप त्वचा में निखार अवश्य पायेंगे।
- आधा कटोरी बेसन, दो चम्मच ग्लीसरीन, एक चम्मच चन्दन पाउडर, एक चम्मच पीसी हल्दी, एक चम्मच गुलाब जल, नींबू की 5-6 बूंद डालकर थोड़ा पानी मिलाकर फेट लें। थोड़ी देर बाद इसे त्वचा पर लगाकर 15 मिनट छोड़ दें। इसके बाद पानी से धो लें। इससे मृत त्वचा हट जायेगी, त्वचा के छिद्र खुल जायेंगे तथा त्वचा निखर जायेगी।
- पके हुए पपीते को मेश करके थोड़ा नींबू की कुछ बूंदे डालकर मिक्स कर लें। इसके पेस्ट को चेहरे पर लगाकर 15 मिनट बाद धो लें। ऐसा पेस्ट पके हुए केले का भी बना सकते हैं।
- गर्दन के कालेपन के निवारण के लिए मैदा में छाछ मिलाकर पेस्ट बनाएं व गर्दन पर लगाकर थोड़ी देर छोड़ दें। बाद में पानी से धो लें।
- त्वचा रुखी हो तो एक बड़े चम्मच दही में एक छोटा चम्मच शहद मिलाकर चेहरे व गर्दन पर लगायें। 10-15 मिनट बाद साफ पानी से धोयें।
- तेलीय त्वचा है तथा बार-बार पसीना आता है तो बार-बार ठंडे पानी से धोयें। चिकनाहट युक्त क्रीम का प्रयोग कम करें।
- नारियल तेल/सरसों तेल/आलिव ऑयल से त्वचा की मालिश करें। फिर कुछ देर बाद स्नान करें।

नोट : त्वचा रोग होने पर डॉक्टर से परामर्श कर उपचार करें।

श्रम ही जीवन है

परिवार समाज व देश के समुचित विकास के लिए श्रम को सत्य की तरह महत्व और सम्मान देने की आवश्यकता है। यह भारतीय ऋषि परंपरा के अनुरूप है। जो जीवन के 'सत्य' को समझ नहीं पाते वो श्रम की उपेक्षा करते हैं। जो 'सत्य' को समझते हैं वे 'श्रम' को अनिवार्य और मनुष्य की गरिमा बढ़ाने वाला मानते हैं। हमारी संस्कृति में ईश्वर को सच्चिदानंद (सत्+चित्+ आनंद) स्वरूप कहा गया है। सत अर्थात जो वास्तव में है श्रेष्ठ है, सदैव है। चित का अर्थ होता है- चेतन, ऊर्जावान, सक्रिय। इन दोनों गुणों को अंगीकार करने से ही 'आनंद' की प्राप्ति संभव होती है। सत्य की समझ भी अधिकांश व्यक्तियों को नहीं होती। वे सत्य को समझने की जगह अपनी मान्यता को ही 'सत्य' सिद्ध करने के लिए जी तोड़ प्रयास करते रहते हैं। सत्य को समझने और अपनाने के लिए विवेक और साहस दोनों को निखारना पड़ता है। जो जीवन के सत्य को समझेगा, वह ही श्रम के महत्व और गौरव को भी समझ सकेगा अन्यथा सत्य और श्रम, दोनों का प्रदर्शन भर करके वह उनसे किनारा कर लेगा। श्रम को सार्थक, गरिमामय में बनाना है तो उसके लिए श्रम के साधक में तीन प्रवृत्तियां होनी चाहिए:1. श्रम के प्रति सम्मान का भाव, 2. श्रम करने की पर्याप्त क्षमता तथा 3. श्रम की सृजनात्मकता। 'तप' शब्द के साथ ये तीनों भाव जुड़े हुए हैं। श्रम की गरिमा एवं प्रतिष्ठा को हमें समझना चाहिए।

जीवन की पूर्णता प्राप्त करनी है तो परिश्रम करना ही पड़ेगा। स्वामी विवेकानंद ने कहा है "श्रम ही जीवन है, जिस समाज में श्रम को महत्व नहीं मिला, वह जल्दी ही नष्ट हो जाता है।"

वर्तमान परिवेश में हमें परिवारों में, श्रम की महत्ता को समझना आवश्यक हो गया है। हमारे समाज में अधिकांश परिवारों के सदस्य शारीरिक श्रम से विमुख होते जा रहे हैं। परिवार की युवा सदस्य जिनमें बहू-बेटियां भी हैं, घर के श्रम संबंधित कार्यों को कम से कम करना चाहते हैं, इस तरह के कार्यों को करने में छोटापन महसूस करते हैं। वर्तमान में अधिकतर बहू-बेटियां झाड़ू पोछा, बर्तन साफ करना और कपड़े धोने के कामों को खुद न कर नौकरों/बाईयों से करवाने की अपेक्षा रखती हैं, जबकि वास्तव में इन कामों को स्वयं करने में व्यायाम के साथ-साथ बचत भी होती है। माना कि मोबाइल/ टीवी आदि देख कर मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान की वृद्धि होती है। किंतु अधिकांश समय इसमें व्यर्थ नहीं करना चाहिए। हर गृहणी को इसके लिए समय निर्धारित कर, उसका अनुशासित रूप से अथवा मन को वश में करते हुए, पालन करना चाहिए। आज युवा पीढ़ी शारीरिक श्रम के प्रति जागरूक होकर दैनिक जीवन को व्यवस्थित रखेगी तो आगे आने वाली पीढ़ियां भी आपका अनुसरण करेगी। श्रम का अनुदान व्यापक है। रोगों को दूर करने तथा आरोग्य लाभ देने के लिए मोर्चे पर श्रम ही जीतता है। विश्राम का सुख भी अपार है। यह सुख वास्तव में श्रम से थकने वालों को ही मिलता है। श्रम की थकान के बिना मोटे गद्दों पर वातानुकूलित कमरे भी लोगों की नींद उचटी-उखड़ी सी रहती है। बहुतों को तो नींद की गोली खाकर नींद लेनी पड़ती है। दूसरी ओर श्रमशील व्यक्ति कहीं भी लेट जाये तो गहरी नींद का सुख प्राप्त कर लेता है और उठने पर पूरी तरह तरोताजा व स्फूर्ति से भरा होता है। इसलिए हम सभी को श्रम का महत्व पर गौर कर स्वयं श्रम अवश्य करना चाहिए।

- राम प्रकाश मारवाल

माँ से शिकायत

मेरी माँ मेरी प्यारी माँ....
मेरे हर पल आँसू पूछती थी,
आज क्यू फिर रुला गयी।
तपती धूप से बचाती थी,
आज क्यू पेर जला गयी।।
मेरी माँ मेरी प्यारी माँ...

क्यू आज तुझे मुझपर दया न आयी,
क्यू आज तू मुझसे हो गयी परायी।
मै तो तेरी धड़कन से जीता था माँ,
फिर तू मेरे लिये क्यू जी नहीं पायी।।
मेरी माँ मेरी प्यारी माँ...

तू तो सह लेती थी दर्द मेरा,
मै तेरा दर्द सह नहीं पाऊँगा।
देख माँ देख मै रो रहा हू,
अब तो मै किसी से कुछ कह नहीं पाऊँगा।।
मेरी माँ मेरी प्यारी माँ...

तू ओझल होती थी नजरों से तो,
मेरा रोना सुनकर तू आजाती थी।
कहती थी हरपल पास हू तेरे,
दे दिल को दिलासा समझाती थी।।
मेरी माँ मेरी प्यारी माँ...

आजा माँ, दे दिल को दिलासा,
आँखे नम है मनमे है आशा।
आजाना माँ दर्द सहा नहीं जाता,
तुझ बिन माँ अब रहा नहीं जाता।।
मेरी माँ मेरी प्यारी माँ...

बस यही शिकायत है तुझसे माँ,
आज नींद मुझे क्यू नहीं आ रहीं।
देख आँख से आँसू भी न रुकते,
और मुझको तू भी नहीं सुला रही।।
मेरी माँ मेरी प्यारी माँ...

पृथ्वी राज धमुनिया (धरती)

प्रयागराज

पृष्ठ 6 से आगे...

आगे चल कर महर्षि भारद्वाज की मूर्ती के दर्शन किये। इसके आगे पं. मोती लाल नेहरू (भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के पिता) का निवास स्थान 'आनन्द भवन' देखा। यह काफी लम्बे चौडे परिसर के मध्य में स्थित विशाल इमारत है, इसके साथ ही लगता हुआ स्वराज भवन है, यह श्रीमती इंदिरा गांधी का जन्म स्थान है। ये दोनों अब संग्रहालय है।

'अमर शहीद चन्द्र शेखर आजाद पार्क' पहुंचे। यह पार्क बहुत बडे क्षेत्र में फैला हुआ है, इसको पहले कम्पनी बाग के नाम से जानते थे। इसका वॉकिंग ट्रैक 2.9 किलोमीटर का है। इसी परिसर में आगे 'इलाहाबाद संग्रहालय' है। इसमें अन्य कई चीजों के साथ ही ''आजाद का माउजर (पिस्तोल) व गांधीजी का शव यात्रा वाहन भी है। घर आकर दोपहर का भोजन कर कुछ देर विश्राम किया।

दोपहर बाद खुसरो बाग देखने के लिये रवाना हुये रास्ते में ''ऑल सेन्ट केथेड्रल चर्च'' देखते हुये ''खुसरो बाग'' पहुँचे। खुसरो बाग का निर्माण राजकुमार सलीम (अकबर के पुत्र) ने सैरगाह के रूप में करवाया था। अब यहां चार केन्द्रिय संरक्षित स्मारक हैं जिन्हें शाह बेगम का मकबरा, खुसरो का मकबरा निसार बेगम का मकबरा व बीबी तमोलन के मकबरे के नाम से जाना जाता है। यहां खजूर के वृक्षों की श्रॅंखला का मनोरम दृश्य है। यहां फोटोग्राफी की फिर यहां से घर आ गये।

प्रात: जल्दी स्नान कर चित्रकूट के लिये रवाना हुये। रास्ते में मित्र ए.के. सिंह का पैतृक गांव रैपुरा आता है। चित्रकुट (कर्वी) के ''रामघाट'' पर पहुंच कर घाट में नौकायन का आनन्द लिया। यह घाट मंदाकिनी नदी के तट पर है।

चित्रकूट के घाट पर भई सन्तन की भीर,
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक करे रघुवीर।

तोतामुखी हुनमान जी के इशारे पर ही तुलसीदास जी को भगवान राम के यहां दर्शन हुये थे। यहां घाट पर तोता मुखी हुनमान जी की मूर्ति भी है। उपरोक्त दोहा यहां कई जगह लिखा हुआ है फिर घाट पर बना वो स्थान देखा जहां तुलसीदास जी की चन्दन घिसते हुये की मूर्ति स्थापित है।

यहां से अगले पडाव पर रोप वे द्वारा पहाड पर स्थित अनवरत बहती हुई ''हनुमान धारा'' देखने पहुंचे। कहते है लंका दहन के बाद समुद्र में कूदने के बाद भी हनुमान जी की शरीर की जलन समाप्त नहीं हुई थी तो राज्याभिषेक के बाद भगवान श्री राम ने हनुमान जी को विन्ध्यगिरि पर निवास करने के लिये कहा, यहां पर पर्वत से निकली हुई जलधारा अनवरत आज भी श्री हनुमंत लाल जी की पावन देह को प्लावित करती है। इसके थोडी उपर सीता रसोई है। वापस आते हुये ऊँचाई पर स्थित चित्रकूट का निर्माणाधीन हवाई अड्डा देखा। रास्ते में रूककर साथ लाये हुये पैक लंच का रसास्वादन किया। फिर विनायक राव पेशवा द्वारा बनवाया गया गणेश बाग देखा जहा लघु गर्भगृह के साथ-साथ आयताकार मण्डप है। इसके पार्श्व में सातमंजिला जलाशय व सुन्दर बावडी बनी हुई है।

वापस गांव पहुंचने से पहले खेतों की तरफ बने जलाशय तक जाने के लिये रोड के पास ही अरूण के परिजनों द्वारा निर्मित प्रवेश द्वार बना हुआ है। द्वार से कुछ दूर अन्दर चलने पर सूती के भैरव जी का मंदिर व सुन्दर जलाशय है जिस की पाल के मुख्य हिस्से का पक्का निर्माण कर सुन्दर रंगों से सजाया गया है। यह स्थान बहुत ही शांत व रमणीक लगा। शाम को गांव के दक्षिण पूर्व में थोडी दूरी पर बने हुये बहुत बडे बांध को देखने गये। सूर्यास्थ का बहुत ही मनोरम दृश्य था यहां। यहीं पर आस-पास के गांवों के पेयजल के लिये योजना पर काम चल रहा था। फिर घर आ गये। पिताजी गांव के विकास के सौपान बयान करने वाली 'मेधा स्मारिका का प्रकाशन करवाते है। मुझे कुछ स्मारिकाओं की प्रतियां भी भेंट की। फिर रात्रि विश्राम किया।

प्रात: नित्यकार्यों से निवृत होकर, स्नान के कपड़े साथ लेकर गांव रैपुरा से करीब 40 किलोमीटर दूर स्थित श्री परमहंस आश्रम, धारकुण्डी के लिये रवाना हुये। राजापुर- माणिकपुर सड़क मार्ग से चलने पर गांव से थोडी दूर अस्पताल भवन बना हुआ है।

क्रमश:...

छेड़छाड़ पर 4 वर्ष का कारावास

बच्ची की छेड़छाड़ पर जज की कविता

पोस्को कोर्ट कोटा ने छेड़छाड़ के आरोपी को 4 वर्ष का कठोर कारावास 10 हजार रुपए जुर्माना तथा पीड़िता को 2 लाख रुपए देने का निर्णय देते हुए यह कविता भी लिखी-

तुम अकेली नहीं हो, तुम्हारी बात सुनने को हम हैं यहां,
चुपचाप रहकर घुटन में रहने से तो अंधेरा जीत जाएगा,
आगे बढ़कर अन्याय का प्रतिकार करना सीखो,
तभी तुम्हारे साहस का सूर्य उदय होगा।

पीड़िता की दुखद मानसिक स्थिति को समझते हुए न्यायालय का मानना था कि छेड़छाड़ जैसी आपराधिक प्रवृत्तियों पर रोक नहीं लगाई गई तो मासूम बालिकाओं का घर से निकलना तथा स्कूल जाना मुश्किल हो जायेगा।

अत: बालिका की सुरक्षा व सम्मान को मध्यनजर रखते हुए आपराधिक चरित्र वाले व्यक्ति को कारावास का दण्ड देना ठीक समझा।

डिजिटल मार्केटिंग में बनाये अपना कैरियर

आज का समय डिजिटल का है जिसके कारण सभी व्यवसाय भी डिजिटल होते जा रहे है। समय के साथ बदलाव जरूरी है, यही बात बिज़नेस पर भी लागू होती है। समय के साथ बिज़नेस करने के तरीकों में भी बदलाव होते जा रहे है। डिजिटलीकरण का महत्व हमारे जीवन में दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य, व्यापार से लेकर सर्विसेज तक, हर क्षेत्र में डिजिटलीकरण लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में इस डिजिटलीकरण के विविध क्षेत्रों में रोजगार भी खूब फल-फूल रहा हैं। इसलिए युवाओं के बीच में डिजिटल मार्केटिंग इन दिनों एक की.. डिमांडिंग कैरियर आप्शन बना हुआ है।

पिछले कुछ वर्षों में दुनियाभर में डिजिटलाइजेशन बढ़ा है। साल दर साल इंटरनेट यूजर्स की संख्या और बढ़ने का अनुमान है। कुछ वर्षों पहले तक ऑनलाइन शॉपिंग का ट्रेंड नहीं था लोग ऑनलाइन शॉपिंग से डरते थे आज छोटे से गांव और कस्बों में भी लोग ऑनलाइन खरीददारी कर रहे हैं। अमेजन, मिंत्रा, फ्लिपकार्ट सहित कई अन्य बड़ी कंपनियां और कस्बों को अपने मार्केटिंग नेटवर्क में जोड़ रहा है। छोटे-छोटे व्यवसाई भी तरह-तरह के प्लेटफार्म्स से अपने ग्राहकों तक प्रोडक्ट्स और सर्विसेज पहुंचा रहे हैं। कई छोटे दुकानदार तो व्हाट्सअप से अपना कारोबार चला रहे हैं। इन दिनों डिजिटल तरीकों से कामकाज और व्यवसाय करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसलिए आज के समय में डिजिटल मार्केटिंग की आवश्यकता हर सेक्टर में महसूस हो रही है। आज आम आदमी से लेकर छोटे व्यवसाय और बैंक आदि तमाम सेक्टर डिजिटल मार्केटिंग में लगातार आगे बढ़ रहे। हैं। डिजिटल मार्केटिंग में कंप्यूटर और इंटरनेट, सोशल मीडिया जैसे नए मीडिया के जरिये की जाती है। यह ऑनलाइन मार्केटिंग भी कहलाती है। दरअसल हर तरह के मार्केट में मार्केटिंग बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। मार्केटिंग किसी भी समाज और बाजार में नए ट्रेंड सेट करती है।

कोई भी नया प्रोडक्ट, सर्विस या फिर आइडिया तब तक मजबूत ब्रांड़ नहीं बन पाता जब तक उसके लिए दमदार मार्केटिंग न की जाए। मार्केटिंग के एक्सपर्ट्स रणनीतियां बनाने और उन्हें सफलता से एक्जिक्यूट करने के माहिर होते हैं। इसीलिए मार्केटिंग एक बहुत शानदार जॉब फील्ड है। अब इसी का एक नया तरीका पिछले कुछ सालों में बहुत सफल हुआ है जिसे हम %%डिजिटल मार्केटिंग%% के नाम से जानते हैं। डिजिटल मार्केटिंग का मतलब है कि डिजिटल टेक्नॉलाजी और स्मॉर्ट गैजेट्स के उपयोग से मार्केटिंग करना है।

क्या है डिजिटल मार्केटिंग : किसी भी छोटी फैक्ट्री से लेकर बिलियन डॉलर वैल्यू वाली कंपनियों में भी मार्केटिंग के एक्सपर्ट और स्पेशलिस्ट की एक बड़ी टीम काम करती है। कंपनियों के नए प्रोडक्ट या सर्विसेज की लॉन्चिग से लेकर उसे बाजार में प्रमोट करना, सेल्स के नए तरीके खोजना और बाजार की प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन, निरीक्षण करना और आने वाले वक्त के लिए रणनीतियां तैयारी मार्केटिंग सेक्शन के लोग ही करते हैं। आज कंपनियों और पूरे कॉर्पोरेट वर्ल्ड में यही काम डिजिटल मार्केटिंग टीम द्वारा किया जाता है। डिजिटल मार्केटिंग के लोग भी अपनी कंपनियों के प्रोडक्ट्स और सर्विसेज के लिए डिजिटल मार्केटिंग कंटेट को तैयार करते हैं। वे डिजिटल विज्ञापन कैंपेनिंग करते हैं। तरह-तरह के मीडिया सलेक्ट कर वे अपने लक्षित ग्राहकों तक मार्केटिंग कंटेंट को पहुंचाते हैं। वेबसाइट्ट्स, सोशल मीडिया, ई-पेपर, यूट्यूब और अन्य तरह के डिजिटल माध्यमों पर बैनर ऐड आदि रिलीज करने का काम भी ये लोग ही करते हैं। ई-मेल्स के जरिये भी वे कम्युनिकेट करते हैं। इस प्रकार हर तरह से डिजिटल मार्केटर्स इन विविध तरीकों से अपनी कंपनी के लक्षित मार्केट में हिस्सेदारी को बढ़ाने का काम करते हैं।

कैसे करें शुरूआत : डिजिटल मार्केटिंग में शुरूआत आप किसी भी वक्त कर सकते हैं। आप मार्केटिंग के प्रोफेशन में हैं और जॉब स्विच करना चाहते हैं तो आपके लिए डिजिटल मार्केटिंग में शानदार कैरियर आप्शंस मिल सकते हैं। अगर आप अभी पढ़ रहे हैं और इस सेक्टर में आना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि आप बीसीए, एमसीए, बीबीए या एमबीए या मैनेजमेंट का कोई डिप्लोमा कर लें। कई तरह के इंस्टिट्यूट्स ऐसे कोर्सेस करवाते हैं। वैसे अगर आप कोई ट्रेडिशनल मैनेजमैंट कोर्स कर रहे हैं तो भी आप डिजिटल मार्केटर बन सकते हैं। आप इस सेक्टर में अपनी रूचि का आप्शन चुने और किसी भी संस्थान से एक ट्रेनी बतौर काम शुरू करें। थोड़े ही समय में अगर आपने बेहतर ढंग से सीख लिया तो आगे आप बहुत अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं।

अगर आप कोई भी मार्केटिंग से जुड़ा हुआ कोर्स कर रहे हैं और डिजिटल मार्केटिंग फील्ड में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि आप डिजिटल मार्केटिंग में ही स्पेशलाइजेशन करें। दरअसल हर कंपनी अपने कोर सेक्टर से जुड़े हुए लोगों को अपने यहां जॉब्स और और प्रमोशंस में प्राथमिकता देती है। इसलिए अगर आपके पास में डिजिटल मार्केटिंग का स्पेशलाइजेशन होगा तो आपके लिए इस सेक्टर में बेहतर कैरियर बनाना और आसान हो जाएगा। हमेशा स्पेशलिस्ट यानि विशेषज्ञों की आवश्यकता हर फील्ड में होती है। अगर आप अपने आपको किसी भी डिजिटल मार्केटिंग कंपनी में टॉप पोजिशन पर देखना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि आप डिजिटल मार्केटिंग से जुड़ा हुआ स्पेशलाइजेशन का कोर्स जरूर करे। एक डिजिटल मार्केटर को सोशल मीडिया मार्केटिंग, सोशल मीडिया नेटवर्क एनालिसिस, सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (SEO), वेबसाइट, ईमेल मार्केटिंग, कटेंट मार्केटिंग, आनलाईन विज्ञापन का महत्व स्पष्ट तौर पर समझना बहुत जरूरी है। आज ट्रेंड्स बताते हैं कि सोशल मीडिया किसी भी मार्केट में एक इन्फ्लुएंसर की भूमिका में होता है इसलिए आपको बतौर एक डिजिटल मार्केटर सोशल मीडिया मार्केटिंग की प्रैक्टिस या रणनीतियां भी सीखनी चाहिए।

डिजिटल मार्केटिंग की संभावनाएं लगातार बढ़ रही है जैसे-जैसे तकनीक का प्रसार होगा। लोग डिजिटल अनुभवों से गुजरेगें तो डिजिटल मार्केटिंग से जुड़े अवसर और ज्यानदा बढेंगे।

-**प्रमोद कुमावत,** एक्सपपर्ट, डिजिटल मार्केटिंग

मतदान दिवस लोकतंत्र का महापर्व

मतदान करना भारतीय लोकतंत्र का एक विशेष अवसर होता है। यह सर्वविदित है कि 'लोकतंत्र' शब्द का अर्थ 'लोगों का शासन' होता है। जनता का, जनता के लिये, जनता द्वारा शासन ही लोकतंत्र होता है। चुनाव निर्धारित समयावधि में होते हैं। जन प्रतिनिधियों का चयन मतदाता द्वारा किया जाता है। भारत का प्रत्येक वयस्क नागरिक मतदाता होता है बशर्ते उसका नाम शासन की मतदाता सूची में दर्ज हो। मत+दाता शब्द में नागरिकों को 'दाता' शब्द की महानता से सम्बोधित किया गया है। यहां नागरिक अपने विवेकानुसार अपनी भावनाओं को प्रेषित करने की सामर्थ्य और शक्ति के साथ मत प्रकट करता है।

भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना दि. 25 जनवरी 1950 को हुई। इसलिए भारत में हर वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भूतपूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त स्व. श्री टी.एन. शेषन की दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति से प्रत्येक मतदाता के सचित्र मतदान परिचय पत्र निर्मित किये गये। यह कठिनतम कार्य सम्पूर्ण भारत में एक महाअभियान के रूप में पूर्ण किया गया। इस परिचय पत्र से ही मतदान वैध मान्य किया जाने लगा, साथ ही फर्जी मतदान में भी रोकथाम सम्भव हो सकी।

भारत में मतदान का दिवस लोकतंत्र का महापर्व होता है। चुनावी उम्मीदवारों के साथ राजनीतिक दलों को इसकी विशेष प्रतीक्षा रहती है। यह दिन गाँव, शहर, राज्य एवं देश की दशा व दिशा निर्धारण करने वाला होता है। इस दिन जनता उम्मीदवारों को दर्पण दिखाते हुए अपना निर्णय प्रस्तुत करती है। हर परिस्थिति में जनता जनार्दन का निर्णय राजनीतिक दलों को शिरोधार्य करना होता है। मतदान का दिवस चुनावी विश्लेषकों के लिये शोध का व अपनी योग्यता अनुसार आंकड़े प्रदर्शित करने का होता है। अनेकों बाद उम्मीदवारों की लोकप्रियता व रुझानों के विपरीत परिणाम देखने को मिलते हैं।

चुनाव प्रबन्धन में सरकार का भारी आर्थिक व्यय के साथ सैंकड़ों शासकीय कर्मियों का अथक परिश्रम निहित होता है। देश के जनप्रतिनिधि चयन में प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी होती है। जनप्रतिनिधि जनता का सेवक होता है जो सदन में अपने क्षेत्र की जनता का प्रतिनिधित्व करता है। ग्राम, नगर, राज्य व राष्ट्र प्रगति की नीति, योजनाओं के क्रियानवयन में हर मतदाता की अहम भूमिका होती है। जनता को जनार्दन अर्थात प्रभुतुल्य मान्यता दी गई है। जनता के निर्णय को ईश्वर का आदेश मानकर ही सत्ताधारी और प्रतिपक्ष अपने अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं यही भारतीय लोकतंत्र का सौन्दर्य है।

90 करोड़ से अधिक मतदाता वाले विशाल भारतीय लोकतंत्र में राष्ट्रीय दिवस मनाने की सार्थकता तब ही सफल हो सकेगी, जब प्रत्येक मतदाता अपने विवेक से अच्छा बुरा दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रहित में बिना कोई प्रलोभन से प्रभावित हुए निर्भय होकर अपने मताधिकार का प्रयोग व मतदान के प्रतिशत में सकारात्मक वृद्धि करें, यही राष्ट्रप्रेम के प्रति सच्ची निष्ठा व समर्पण होगा।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका आपसे अपील करती है कि अपने मताधिकार का उपयोग अवश्य करें। यदि चुनाव में 'कुमावत समाज' का कोई प्रत्याशी हो तो राजनैतिक भेदभाव भुलाकर उसे अपना मत एवं समर्थन देकर अवश्य जिताएं।

हिसाब

- रमेश गैदर

एक बाप दुकान में बैठा हिसाब लिख रहा था। सामने कबूतर दाना चुग रहा था। पास में बैठा बालक उत्सुकतावश पूछ रहा था। 'पापा, ये त्या है?'

बाप बताता रहा- -'बेटा, कबूतर।'

बालक ने रट लगा दी थी, 'पापा, ये त्या है?... ये त्या है?'

बाप ने पुनः पुनः बताया था, 'बेटा, कबूतर।... बेटा, कबूतर है।'

बच्चा उत्सुकता में बार-बार पूछता रहा था और बाप प्यार से हर बार उत्तर देता रहा। खीझ, उक्ताहट या झुंझलाहट उसके कहीं आसपास भी नहीं थी। उत्तर देते हुए वह बराबर बही में लिखता जा रहा था।

पैंतीस वर्ष बाद बेटा जवान था। गद्दी का मालिक। बाप बुढ़ापे में जर जर-शरीर। पर-वश। तन पूरी तरह से काम नहीं कर पा रहा था। आँखों से धुधंला-धुधंला दिखाई देता था। कानों से ऊँचा सुनाई देने लगा था। छड़ी के सहारे टेक-टेक कर वह घर से दुकान तक आ जाता था। सांझ पड़े उसको लौटना था। उसको उसकी छड़ी नहीं मिल रही थी। उसने पूछा, 'बेटा, मेरी छड़ी कहाँ है?'

बेटे ने सामान्य स्वर में कहा, 'खूंटी पे टंगी है।'

वृद्ध ठीक से सुन नहीं पाया। उसने पुनः पूछा- 'बेटा, मेरी छड़ी कहाँ है?'

बेटा एकदम से उबल पड़ा, 'के बिल्कुल ही फूटगी अर सुनने सूं बी गियो। छड़ी सामने खूंटी पर टंगी है।'

बाप मंद-मंद मुस्कराते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ा। टटोलते हुए उसने आलमारी से एक पुरानी बही निकाली। उसका एक लंबा पाना उसके सामने पसारते हुए प्यार से कहा, 'बेटा, पढ़कर देख। यह एक पुराना हिसाब है।'

बेटा पढ़ने लगा।... 'पापा, ये त्या है?'

पूरे पच्चीस बार यही सवाल। और, पूरे पच्चीस बार का वात्सल्यपूर्ण, संयत भाषा में दिया गया हुआ उत्तर-'बेटा, कबूतर।'

बही का पूरा पन्ना पढ़ने के बाद बेटा हिसाब समझ गया था। मूल पर पैंतीस साल का ब्याज। वह उठा। खूंटी से छड़ी उतार कर बाप के हाथ में थमाते हुए उसने कहा, 'बाप जी, ये ल्यो छड़ी।'

कंधे पर रखे बेटे के हाथ को चुम कर वृद्ध बाप ने छड़ी थाम ली थी।

लेखक- हरदान हर्ष संकलनकर्ता- जयसिंह गुडीवाल

ईश्वर जड़-चेतन सभी में है, हमें अहंकार से बचना चाहिए

संत ज्ञानेश्वर बड़े प्रसिद्ध महापुरुष थे। एक बार उन्होंने किसी व्यक्ति को एक प्राणी को मारते देखा तो उनसे सहन नहीं हुआ। उन्होंने अपने शरीर से उस प्राणी के शरीर को आवरित कर दिया। इस प्रकार उस प्राणी को बचाते-बचाते स्वयं ने भी मार खाई और मारने वाले से कहने लगे कि इसे मत मारो।

उसने पूछा कि इसको क्यों नहीं मारूं? ज्ञानेश्वर जी कहते हैं, ''**जो तुम्हारे भीतर चेतन शक्ति है वही तो इसके भीतर भी है**'' इसलिये इसे मत मारो। इस पर मारने वाले ने प्रति-प्रश्न किया कि यह तो महिष है और मैं मानव, हम दोनों एक कैसे हो सकते हैं? ज्ञानेश्वरजी ने उत्तर दिया कि शरीर में भिन्नता दिखाई देने पर भी चेतनता प्रदान करने वाले आत्मा एक होने से हम सब एक ही हैं। जब दोनों में विवाद हुआ तो मारने वाले ने ज्ञानेश्वरजी को साथ लेकर ग्राम पण्डितों के पास जाकर अपना निवेदन प्रस्तुत किया। पण्डितों ने ज्ञानेश्वरजी से पूछा कि क्या तुम एक महिष और ब्राह्मण में कोई भेद नहीं मानते? ज्ञानेश्वरजी ने कहा, आत्म-दृष्टि से किसी भी प्रकार का कोई भेद नहीं है। पण्डितों ने पुन: प्रश्न किया कि ''क्या तुम इस महिष से वैदिक मंत्रों का उसी विधि से उच्चारण करा सकते हो, जैसे ब्राह्मण वैदिक मंत्रों का विधि पूर्वक उच्चारण करता है?''

ज्ञानेश्वरजी ने उस महिष को दुलारते हुए कहा कि मेरे भाई! ये उपस्थित महानुभाव वैदिक मंत्रों को सुनना चाहते हैं। इनकी आज्ञा का पालन हमारे लिये कर्तव्य हो सकता है, इसलिये सुना दो। **इतना कहने की देर थी कि उस महिष ने वैदिक मंत्रों का गायन प्रारम्भ कर दिया।** सब लोग मुग्ध होकर श्रवण करने लगे, ऐसी कथा है। इस अद्भुत घटना ने किशोर अवस्था में ही ज्ञानेश्वरजी को सर्वत्र प्रख्यात कर दिया। वामदेव जी भी ज्ञानेश्वरजी से समकालीन थे जबकि ज्ञानेश्वर किशोर ही थे। वामदेव को बड़ी ईर्ष्या हुई, वे शेर पर सवार होकर ज्ञानेश्वरजी के पास चले गए। उस समय ज्ञानदेव गीता पर मराठी में अपना भाष्य 'ज्ञानेश्वरी' लिख रहे थे। यह वास्तव में एक अद्भुत टीका है। विशेषता इस बात की है कि यह ग्रन्थ उन्होंने केवल आठ वर्ष की आयु में लिखना प्रारम्भ किया था। कुछ श्लोकों की टीका लिखने के बाद वे अपने भाई और बहन के साथ घर के सामने एक पुरानी टूटी दीवार पर बैठे हुए थे। वामदेवजी सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने सोचा कि ज्ञानेश्वर का बड़ा नाम है, लेकिन **आज तो वह स्वयं उठकर मेरा स्वागत करने आएगा क्योंकि मैं तो सिंह पर सवार होकर उसके पास जा रहा हूँ।**

जब ज्ञानेश्वरजी ने सिंह पर सवार होकर आते हुए वामदेवजी को देखा कि वे तो महापुरुष हैं, सिद्ध भी हैं, प्रणाम तो अवश्य करूँगा, लेकिन इनके अहंकार का नाश करना भी आवश्यक है। इसलिये वे उस टूटी दीवार पर बैठे रहे। वामदेवजी ने पूछा कि ज्ञानेश्वर क्या कर रहे हो? ज्ञानेश्वरजी ने उत्तर दिया, गुरुदेव, अभी आ रहा हूँ। आप अपने सिंह को वहीं रोकिये, मेरी दीवार अभी चलकर आ रही है। **तब दीवार वैसे ही चलने लगी जैसे वामदेव का सिंह चल रहा था।**

तत्काल वामदेव अपने सिंह से उतर आए तो ज्ञानेश्वर जी भी अपनी दीवार से उतर गये। वामदेवजी बोले कि तुम्हारे में ऐसी अद्भुत शक्ति है भाई, ऐसा मुझे मालूम नहीं था। ज्ञानेश्वरजी ने कहा कि वास्तव में मुझे मालूम नहीं था कि मुझमें ऐसी शक्ति है। लेकिन न मालूम आपको सिंह पर बैठकर आते देखकर मुझे ऐसा क्यों लगा कि आप चेतना को अपनी इच्छा के अनुसार चला सकते हो तो मैं सर्वत्र ब्रह्म ही तो है, ऐसा सोचकर ही अपनी दीवार से कहा, 'चलो' और वह सचमुच चलने लगी। ये दोनों घटनाएँ आधुनिक वैज्ञानिक युग में अमान्य हो सकती है, किन्तु श्रद्धा के संसार में एक भावना होती है, एक बोध होता है। **बोध इतना कि ईश्वर जड़-चेतन सभी में विद्यमान है। बोध यह भी है कि अहंकार से बचना चाहिए।**

प्रो. बालकृष्ण कुमावत, उज्जैन

सांस्कृतिक ज्ञान

दो सोच	-	सकारात्मक व नकारात्मक
दो विद्या	-	परा (लौकिक ज्ञान) व अपरा (ब्रह्मज्ञान)
दो पक्ष	-	कृष्ण पक्ष व शुक्ल पक्ष (प्रत्येक 15 दिन)
दो बुद्धि	-	सद्बुद्धि व दुबुद्धि
तीन काल	-	भूत, वर्तमान व भविष्य
त्रिदोष	-	वात, पित्त व कफ
तीन शरीर	-	स्थूल, सूक्ष्म व कारण
त्रिदेवी	-	काली, लक्ष्मी व सरस्वती
त्रिपथ	-	कर्म, ज्ञान व उपासना
त्रिफला	-	हरड, बहड व ऑवला
त्रिकुट	-	सौंठ, कालीमिर्च व पीपल
तीन बल	-	तन, मन व धन
तीन ऋण	-	पितृ ऋण, देव ऋण व ऋषि ऋण
त्रिदेव	-	ब्रह्मा, विष्णु व महेश
तीन लिंग	-	पुलिंग, स्त्री लिंग व नपुंसकलिंग
त्रिलोक	-	स्वर्ग, पृथ्वी व पाताल
चार युग	-	सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग व कलियुग
चार वेद	-	ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद
चार वर्ण	-	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य व शूद्र
चार आश्रम	-	ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास
चार धाम	-	जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम्, बद्रीनारायण व द्वारका
चार दिशाएँ	-	पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण

कुंडली से आयु निर्धारण

शास्त्रों के अनुसार बालक की आयु का निर्धारण उसकी माता के गर्भ में ही हो जाता है । ज्योतिष में मृत्यु का कारण एवं आयु का निर्धारण सामान्यत: अष्टम भाव से ही किया जाता है। इसके साथ में ही अष्टमेश, आयु का कारक शनि, लग्न और लग्नेश, राशी और चंद्रमा, द्वादश भाव एवं मारक (द्वितीय और सप्तम) भाव व भावेश पर शुभ-अशुभ प्रभाव और युतियों के माध्यम से भी आयु का विचार करना महत्वपूर्ण होता है। सामान्यत: मारक ग्रह आयु में कमी करके मृत्यु अथवा कई प्रकार से कष्ट देने का योग देते हैं इसलिए, मारकेश से संबंधित ग्रहों के वैदिक यंत्र स्थापित करके उस मार्केश के मंत्रों के जाप और दान करते रहना चाहिए।

व्यक्ति की कुंडली में लग्न, तृतीय और अष्टम भाव की मजबूत स्थिति आयु में वृद्धि करती है। जब किसी जातक की कुंडली में 2, 7 यानि मारक भाव एवं 12 वां यानि व्यय भाव ज्यादा बलि होंगे, इसके साथ ही आयु कारक ग्रह शनिदेव और लग्न, तृतीय व अष्टम भाव कमजोर होंगे तो उस व्यक्ति की एवरेज आयु में थोड़ी कमी होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। ऐसी स्थिति में पाप ग्रहों के हस्त निर्मित वैदिक यंत्रों को स्थापित करके इनके जाप और दान लगातार करते रहना चाहिए।

अच्छी आयु के निर्धारण में लग्नेश काफी महत्वपूर्ण है। जब लग्नेश 8 या 12 वें भाव में बलहीन होकर स्थित होगा तो अक्सर स्वास्थ्य में परेशानी देखने को मिलती है जिससे जीवन व्यथित होगा, इसलिए लग्नेश की मजबूती के लिए लग्नेश के ग्रह का एक हस्तनिर्मित वैदिक यंत्र स्थापित करके जातक को लग्नेश के वैदिक मंत्रों का नित्य जाप करते रहना चाहिए। जाप करने से लग्नेश मजबूत होगा और आयु में निश्चित ही वृद्धि करने में सहायक होगा। जातक की कुंडली में जब चंद्रमा-राहु, शनि, सूर्य, केतु आदि पाप ग्रहों से युक्त होकर 6ठें, 8वें या 12वें भाव में स्थित हो, इसके साथ ही लग्नेश भी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर शक्तिहीन हो तो, इससे बालारिष्ट या जातक की आयु में कमी का योग बनता है। जब कुंडली में लग्नेश कमजोर होकर 6ठें या 8वें भाव में स्थित हो और लग्नेश पर किसी शुभ ग्रह का प्रभाव ना हो, साथ ही गुरु और चंद्रमा भी निर्बल अवस्था में हो तो, ऐसा योग जातक की आयु में कमी करता है।

शुभ प्रभाव से रहित चंद्रमा पाप कर्तरी योग (शनि और राहु) के मध्य में स्थित हो और लग्नेश भी कमजोर हो तो भी आयु में कमी देखी जा सकती है। ऐसे ही जब लग्नेश होकर चंद्रमा अस्त हो और राहु, सूर्य या केतु के साथ बैठकर पाप ग्रहों से दृष्ट भी हो तो, ऐसा योग आयु में कमी कर सकता है। चंद्रमा को मजबूत बनाने के लिए वैदिक चंद्र यंत्र को स्थापित करके चंद्र ग्रह के जाप करने चाहिए !

यदि अष्टमेश-6ठें या 12वें भाव में स्थित होकर पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो भी आयु में कमी हो सकती है। इसी प्रकार से द्वितीय और बारहवें भाव में पाप ग्रह स्थित हों साथ ही लग्नेश भी बेहद कमजोर हो, तो भी आयु में कमी हो सकती है।

गुरु अच्छी आयु में बेहद सहायक ग्रह माना जाता है। जब गुरु 6ठें या 8वें भाव में कमजोर होकर पाप ग्रहों से युति करता है तो यह स्थिति भी आयु में थोड़ी कमी करती है, इसलिए गुरु ग्रह को मजबूत करने के लिए गुरु का हस्तनिर्मित वैदिक यंत्र स्थापित करके इसकी नित्य पूजा और गुरु ग्रह के जाप करने चाहिए।

जातक को हस्तनिर्मित सर्व रोग निवारण यंत्र की स्थापना करके प्रतिदिन इस वैदिक यंत्र का पूजन करना भी आयु विषयक शुभ परिणाम देता है।

अल्पायु योग के निदान - जब जातक की कुंडली में आयु विषयक कोई परेशानी हो तो, उसे प्रतिदिन हनुमान चालीसा और महामृत्युंजय मन्त्र के पाठ और प्रत्येक व्यसन से भी दूर रहना चाहिए, इसके साथ ही लग्नेश और प्रमुख ग्रहों को मजबूत करने के लिए वैदिक यंत्रों की स्थापना करके उन ग्रहों के मंत्रों के जाप आदि भी लगातार करते रहना चाहिए। इससे आयु विषयक समस्याओं का समाधान होता है।

-डॉ योगेश, ज्योतिषाचार्य, मानसरोवर, जयपुर।
M.:8058169959

आईये जाने पीपल के वृक्ष के बारे में

हिन्दु मतावलम्बियों द्वारा वृक्ष पूजा करने का प्रावधान है। हिन्दुओं द्वारा पीपल के वृक्ष को पवित्र मानकर इसकी पूजा की जाती है। धार्मिक मान्यता के अनुसार पीपल के वृक्ष में भगवान विष्णु का निवास माना गया। स्कन्द पुराण अनुसार पीपल की जड़ में विष्णु तने में श्री कृष्ण (केशव), शाखाओं में नारायण, पत्तों में भगवान हरि और फलों में समस्त देवता निवास करते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार पीपल ही एक ऐसा वृक्ष है जो दिन-रात 24 घंटे ऑक्सीजन (प्राणवायु) छोड़ता है, जबकि अन्य वृक्ष रात को कार्बन आक्साइड छोड़ते हैं। इस प्रकार प्राणियों के लिए पीपल हितकर है। पीपल का वृक्ष गर्मी में शीतलता तथा सर्दियों में गरमाहट देता है। यह प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक है तथा संक्रमण करने वाले वायरस इसके निकट आते ही नष्ट हो जाते हैं। पीपल के पत्तों, छाल तथा फलों से आयुर्वेदिक औषधि बनाई जाती है तथा इसकी सूखी टहनियां यज्ञ में काम ली जाती है। वातावरण शुद्धि तथा पर्यावरण सुधार के लिए यह सुलभ साधन है। इसका संरक्षण करने के लिए इसकी पूजा करने की धारणा हमारी संस्कृति में है।

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोड़िया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टोंक फाटक, जयपुर

विशिष्ठ संरक्षक

वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नाालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर

वि/101 श्री दीपेश टी. मँडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, ढोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/150 श्री कैलाश घोड़ावड़, सूरत
वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

16 अक्टूबर श्रीमती सूरजी देवी आईथान, ढोडसर
16 अक्टूबर श्री ऊँकारमल पालड़िया, उदयपुर
17 अक्टूबर श्री भंवरलाल धुंधारिया (जोबनेर वाले)ठेकेदार सुूर्य नगर, जयपुर
18 अक्टूबर श्री गोपाल कुमावत राजोरिया, महात्मा गांधी नगर, डीसीएम, जयपुर
19 अक्टूबर श्रीमती रमा धर्मपत्नी स्व. श्री विष्णु केलगुरिया, झोटवाड़ा, जयपुर
19 अक्टूबर श्री रामप्रकाश खोवाल पुत्र स्व. श्री सूरजमल जी बुद्धसिंहपुरा, जयपुर
20 अक्टूबर श्री मोहनलाल मारवाल बरकत नगर, टोंक फाटक, जयपुर
21 अक्टूबर श्रीमती भूरी देवी बधानिया, गोपाल जी की तलाई, जयपुर
22 अक्अूबर श्री सत्यनारायण सिरोहिया श्याम नगर, प्रथम सांगानेर, जयपुर
25 अक्टूबर, श्री बाबूलाल जी सोकल विद्यानगर भंवरकुआं चौराहा, इन्दौर
25 अक्टॅबर श्रीमती संतरा देवी, धर्मपत्नी श्री प्रभूदयाल कुदाल कन्धारी नगर, इन्दौर
25 अक्टूबर श्रीरामनाथ धुंधारिया, बेरावली ढाणीनीदड़, जयपुर
25 अक्टूबर श्री आशीष कुमावत पुत्र स्व. श्री राधेश्याम जालवाल, खातीपुरा, जयपुर
25 अक्टूबर श्री जुगल किशोर सोखल, कैलाशपुरी किशनगंज, अजमेर
26 अक्टूबर श्री कैलाश कुमावत पुत्र श्री सूरज मल जलिन्द्रा, निवाणा, जयपुर
26 अक्टूबर श्री रामलाल पुत्र स्व. श्री पूसा मारोठिया मदनगंज किशनगंज, अजमेर
27 अक्टूबर श्रीमती कमला देवी मोरवाल, विजयविहार फेज-1, शांति बाजार रोड, दिल्ली
28 अक्टूबर श्रीमती रतनदेवी धर्मपत्नी श्री रामसिंह मारवाल, बरकत नगर
29 अक्टूबर श्री बन्धीलाल धुंधारिया, माला की ढाणी, टोडा, जयपुर
29 अक्टूबर श्रीमती सुशीला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री श्याम सिंह तांगड़ा मानसरोवर, जयपुर
30 अक्टूबर श्री राम अवतारअनावड़िया, अजमेरा कॉलोनी, बाजणी तलाई, सांगानेर
30 अक्टूबर श्रीमती मिन्टोदीव धर्मपत्नी स्व. श्री दामोदर लाल खोवाल, गोविन्दपुरा, जयपुर
30 अक्टूबर श्रीमती बद्रीदेवी राज कछावा, गोपाल जी की तलाई, सांगानेर, जयपुर
31 अक्टूबर श्रीमती मिन्टो देवी खोवाल, गोविन्दपुरा, जयपुर
1 नवम्बर श्रीमती चन्दा धर्मपत्नी श्री लक्ष्मण सिंह बबेरीवाल, सांगानेर, जयपुर
2 नवम्बर श्री गिरधारीगल बड़ीवाल धावाऊ अजमेर रोड, जयपुर
3 नवम्बर श्रीमती शांतीदेवी धर्मपत्नी श्री अर्जुन लाल दोराया महावीर नगर प्रथम, जयपुर
4 नवम्बर श्री भविका (ईशु) पुत्र श्री सत्यनारायण घोड़ेला किशनगढ़, अजमेर
4 नवम्बर श्री प्रकाश चन्द अनावड़िया आदर्श कॉलोनी, निम्बाहेड़ा।
5 नवम्बर श्रीमती जानकी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री लाल चन्द मारवाल, मांग्यावास, जयपुर
5 नवम्बर श्री रामगोपाल खोरानिया, लक्ष्मीनारायणपुरी, दिल्ली बाईपास
6 नवम्बर श्री बाल चन्द जी अजमेरा पुत्र स्व. श्री झूथारामजी सांगानेर, जयपुर
10 नवम्बर श्रीमती अम्बिका वर्मा मारोठिया, बाबा हरिशचन्द्र मार्ग, जयपुर
12 नवम्बर श्रीमती द्वारका बर्मा पत्नी श्री लाल चन्द जी भौरोदिया, बारूखेड़ा, कोटा
15 नवम्बर श्रीमती गुलाबबाई बालूदिया, गगचाना, छीपा बर्ड़ोद, बारां
19 नवम्बर श्री बद्रीनारायण उदयवाल, माधोराजपुरा, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
बालकिशन	ITI (Electrical)	Self	22.7.95	5'6''	थावल्या	उज्जीवाल	सोकल	कुलचानिया	9314466611	जयपुर
अनुभव	BE	Software Engi.	14.5.97	5'6''	घोड़ेला	कारगवाल	नीमीवाल	गैदर	9309061493	-
प्रकाश	M.Sc.	Private Job	7.5.94	-	मारवाल	संगाठिया	होदकास्या	सिरस्वा	8560951034	जोबनेर
किशोर	BA.	Self business	1.9.94	5'3''	मनेठिया	घोड़ेला	बालोदिया	मारवाल	9772503791	बगरू
सुमित	M.Com., C.A.	Audit Manager Pvt.Ltd.	21.12.92	5'7''	भोरोदिया	मारोठिया	धुंधारिया	तांगड़ा	9001904969	जयपुर
संतोष	ITI, B.Com. RSCIT	Self Business	21.12.97	5'4''	राहोरिया	आसीवाल	धुंधारिया	राजोरा	9413395996	जयपुर
हरीश	Deploma (Civil)	Pvt. Job	3.9.95	5'8''	पडलाया	घोड़ेला	माचीवाल	बारावाल	982956702	जयपुर
सुरेश	Deploma (Civil)	Pvt. Job	20.4.97	5'10''	नीमीवाल	नागा	दम्बीवाल	बड़ीवाल	960238573	लूनवा
यश	B.Com.	Self Business	3.12.97	5'9''	देवतवाल	बालोदिया	किरोड़ीवाल	छूंदवाल	7014178312	किशनगढ़
मोहन	M.Com., ITI	Service Manager	30.6.93	-	सिघाठिया	बड़ीवाल	कारगवाल	बासनीवाल	8890724170	स.मोधापुर
आंशिक विकलांग कैलाश	B.A. B.Ed.	Govt. Teacher	23.3.89	5'5''	दंबीवाल	घोड़ेला	तोंदवाल	कुदाल	9785640788	फुलेरा
सौरभ	LLB,LLM	Pursuing RJS	26.10.94	6'0''	मारोठिया	तूंदवाल	दम्बीवाल	बबेरीवाल	9414454214	जयपुर
अक्षय	M.Com.MBA	Depty manager	20.8.94	5'8''	रेवाड़िया	सिरस्वा	खोवाल	मामोड़िया	9001240928	जयपुर
आर्यन	B. Tech (CS)	Software dup,	3.12.99	5'6''	आशीवाल	रेनीवाल	भातरा	धुंधारिया	9024091472	जयपुर
पवन	B.C.A	Graphic Designer	31.5.93	6'0'	बालोदिया	कुण्डलवाल	सिंघाटिया	खटवाल	7014965032	जयपुर
गौरव	MBA	Manager	2.12.96	-	कुण्डलवाल	अनावड़िया	जायलवाल	तूनीवाल	9983360058	ब्यावर
आशुतोष	M.Sc. (Bio) D.Farma	MR Sun Farma	12.9.96	5'8''	मारोठिया	बासनीवाल	घोड़ेला	घटेलवाल	9928006634	अजमेर

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
चंचल	M.A.Bed	-	3.1.94	5'4''	गैदर	बारावाल	राजोरिया	मामोडिया	9829190386	जयपुर
दुर्गेश नंदिनी	B.Tech. (IT)	Pvt.	1.12.94	5'2''	किरोड़ीवाल	सारड़ीवाल	कारगवाल	धोड़ेला	9351383277	जयपुर
लविका	M.Sc., B.Ed.	Teacher	6.3.95	5'1''	खूंखवाल	बेरा	कुलचानिया	भोरोदिया	9414315055	स.मोधापुर
डॉ. त्रुतिका	MBBS	Doctor	1.4.98	5'6''	सारड़ीवाल	बनावड़िया	लौठ्या	कामिया	9426115682	पुणे
डॉ. भव्या	BHMS	Apprentice in Medical collage	30.5.98	-	सलवाड़िया	साड़ीवाल	धनेरिया	बातरा	9414232982	उदयपुर
कविता	B.Com., CA	Manager Central Bank India	27.3.95	5'2''	मामोड़िया	सोकिल	मारवाल	सारड़ीवाल	9784597401	जयपुर
आयुषी	PG Fashion Deg.	Self Business	1.8.96	5'4''	जलान्दरा	जालवाल	धुंधारिया	बालोदिया	8000788131	जयपुर
(मांगलिक) अंजली	B.A.	Teacher Pvt. Sch.	10.10.98	5'7''	बसवाल	कुदाल	मारवाल	घोड़ेला	8233009001	जयपुर
अंजना	M.A.	Dance Teacher	29.3.90	-	सारड़ीवाल	घोड़ेला	तूंदवाल	किरोड़ीवाल	637572943	किशनगढ़
प्रियांशी	B.Sc.(Nursing)	-	27.2.95	5'4''	राजोरिया	बारावाल	कुसुम्बीवाल	मारवाल	7790921209	जयपुर
राखी	M.A.	-	24 वर्ष	-	मारवाल	नेमीवाल	किरोड़ीवाल	घोड़ेला	9950752555	मदनगंज
अर्चना	B.Com.	Working in CA Farm	19.9.91	5'2''	खटोड़	खोवाल	केक्ट्या	मारोठिया	9619591987	मुंबई

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है। नवीनतम अपेडेट जानकारी हेतु कृपया व्यक्तिगत सम्पर्क करें।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम ''कुमावत इंडिया पत्रिका''

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु यदि आप प्रकाशन सामग्री:- समाचार, फोटो, लेख, कविता, प्रतिभाओं का परिचय, सामाजिक गतिविधियों, जनउपयोगी सूचना आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया kumawatindiapatrika@gmail.com पर मेल करें अथवा कार्यालय पते पर सामग्री प्रेषित करें।

-सम्पादक

आवश्यक सूचना

पत्रिकाएं नियमित रूप से हर माह की 25 तारीख को जयपुर से निर्धारित डाकघर में भेज दी जाती हैं। यदि किसी सदस्य को एक सप्ताह के अन्दर पत्रिका नहीं मिलती है तो आप अपने पोस्टमैन व पोस्ट मास्टर से शिकायत करें एवं हमें भी सूचित करें।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में निःशुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

सदस्यता समाप्ति सूचना

3 वर्षीय सदस्यता वाले सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **बरकत नगर-महेश नगर**-श्री विशाल कम्प्यूटर्स, बरकत नगर महेश नगर फाटक के पास, जयपुर, मो. 94613-43432
13. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
14. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
15. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
16. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

मुकेश वर्मा को कांग्रेस महासचिव पद पर पदोन्नत किया

श्री मुकेश वर्मा (कुमावत) राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव की कार्यकुशलता, निष्ठा एवं समर्पण को दृष्टिगत रखकर पार्टी ने इन्हें प्रदेश कांग्रेस के महासचिव पद पर पदोन्नत किया है। श्री मुकेश वर्मा पिछले 15 वर्षों से झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में सक्रिय रूप से सेवाएं दे रहे हैं तथा भीलवाड़ा के प्रभारी हैं। आप स्थापत्य कला बोर्ड के अध्यक्ष (राज्य मंत्री) भी हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से श्री मुकेश कुमावत को महासचिव बनाए जाने पर हार्दिक बधाई।

प्रभुदयाल तुनगरिया पंतजलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा सम्मानित

किशनगढ़ के योगगुरु प्रभुदयाल तूनगरिया ने योगा सेवा से लोगों को स्वस्थ करने का बीड़ा उठाया हुआ है। ये पिछले 12 वर्षों से गावों व ढाणियों में नि:शुल्क सेवा देते आ रहे हैं तथा योग की जागरूकता को जन जन तक फैलाने का कार्य कर रहे हैं। ये किशनगढ़ में रोज योगा की तीन क्लास लगा रहे हैं। इनके इन विशेष कार्यों से प्रसन्न होकर योगगुरु बाबा रामदेव जी के परम् शिष्य श्री परमार्थ देव जी, मुख्य केन्द्रीय प्रभारी, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार द्वारा सम्मानित किया गया है।

इनकी योग क्लासेस से जो व्यक्ति ठीक हो रहे हैं इनकी प्रशंसा व गुणगान करते हैं। कहते हैं कि लाखों खर्च किया पर लाभ नहीं हुआ किंतु तूनगरिया जी ने योग से हमारे रोगों का निदान कर दिया।

श्री तुनगरिया ने बताया कि वे नि:शुल्क व नि:स्वार्थ सेवा दे रहे हैं। इससे उन्हें परम् आनंद महसूस हो रहा है। अपने व्यापार से समय निकालकर किशनगढ़ की जनता को स्वस्थ करने में लगे हैं। इसके लिए श्री प्रभुदयाल कुमावत (तुनगरिया) को साधुवाद।

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.
MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR
Since 1976

Speciality :
1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com
Website : www.sandalwood.cn.com

राजस्थान विधानसभा चुनाव-2023 में कुमावत समाज के प्रत्याशीगण

जोराराम कुमावत
सुमेरपुर, भाजपा

निर्मल कुमावत
फुलेरा, भाजपा

गजानन्द कुमावत
दातांरामगढ़, भाजपा

डूंगरराम गैदर
सूरतगढ़, कांग्रेस

सुरेन्द्र गोयल
जैतारण, कांग्रेस

इन सभी की विजय हो इसके लिए शुभकामना

हर घर दिवाली महोत्सव 2023

स्वामिनी सेवा संस्था द्वारा पिछले पांच सालों से एक मुहिम चलाई जाती है जिसका नाम **हर घर दिवाली महोत्सव** है इस मुहिम में गरीब व जरूरतमंद लोगों तक मिठाई और कपडे पहुचाऐं जाते है। इस दीपावली 5000 मिठाई के पैकेट तैयार किये गये, संस्था के सदस्यों द्वारा जयपुर में मिठाइयां तथा 500 साडियां अलग-अलग स्थानों पर बांटे गये। जयपुर के अस्पतालों व गरीब परिवारों को भी मिठाई बांटी गयी। संस्था के मंत्री गोविंद वर्मा व कोषाध्यक्ष गुरूदयाल वर्मा ने बताया की संस्था के सभी सदस्यों ने इस मुहीम में तन, मन और धन से सहयोग किया। संस्था ने इन सभी का धन्यवाद किया हैं।

RAS & RTS प्रतियोगी परीक्षा-2021 में उत्तीर्ण समाजजनों को हार्दिक बधाई

सुमित घोड़ेला

मुकेश कुमावत

सुभाष कुमावत

अनुज कुमावत

पूजा कुमावत

राजेन्द्र कुमावत

बिन्दु कुमावत

नोट : जो परीक्षार्थी और उत्तीर्ण हुए हैं कृपया वे अपना फोटो व नाम भिजवाने का कष्ट करें, उन्हें अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

वैवाहिक

Anubhav Verma

Software Engineer
DOB : 14-05-1997

Father's Name	:	Purshottam Verma
Mother's Name	:	Vimla Verma
Education	:	B.E.
College	:	MBM Eng. College Jodhpur
Package	:	Rs. 9 Lakh P.A.
Employed in	:	Extensible it Solutions
Height	:	5'6"
Lives in	:	Jaipur
GAUTRA		**Myself :** Godhela
		Mother : Karagwal
		Nani : Gedar
		Dadi : Nimiwal
Contact No	:	9309061493

विज्ञापन

बधाई

ज्ञान विहार स्कूल, मालवीय नगर,
जयपुर में आयोजित
टीएमएल बेडमिंटन चैम्पियनशिप
सब जूनियर ब्वाय प्रतियोगिता में

मास्टर लविन कुमावत

द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त करने पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छु

लक्ष्मीनारायण-राजकुमारी घोड़ीवाल (दादाजी-दादीजी) मो. 9549656438,
सुरेन्द्र बाबू-प्रीति (ताऊजी-ताईजी), मनीष-शशि घोड़ीवाल (पिताजी-माताजी),
कु. शुभी एवं शिवी (बहिनें) एवं समस्त घोड़ीवाल परिवार

निवास : 7/218, मालवीय नगर, जयपुर-302017

स्वर्गीय श्री मुन्नालाल वर्मा (तोंदवाल) व श्रीमती मनोरमा देवी की पुत्रवधू

श्रीमती रवीना तोंदवाल

(पत्नी श्री नितिन वर्मा)

को

राजस्थान क्षत्रिय कुमावत महिला युवा शक्ति समिति, बूंदी
का जिला अध्यक्ष बनाने जाने पर

हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

संजय-मीनाक्षी (जेठ-जेठानी), भारती-मोहनलाल जी (ननद-नंदोई), सुश्री भूमिका-प्रतीक (भांजा-भांजी), चिराग व चिनार (भतीजे), तनिष्क व प्रत्यक्ष (पुत्र) एवं समस्त तोंदवाल परिवार।

प्रतिष्ठान : चिराग एजेंसीज, बूंदी

।। द्वितीय पुण्यतिथि ।।

।। श्रद्धांजलि ।।

श्रीमती सुशीला देवी

धर्मपत्नी स्व. लक्ष्मीनारायण रामेश्वरजी वर्मा (किरोड़ीवाल)
निवास - दहिसर (मुम्बई), मूल निवास - दाँता
सुपुत्री स्व. भँवरीदेवी मुरलीधरजी खोवाल, रघुनाथगढ़ एवं
स्व. मातादीनजी सुरजमलजी घोड़ेला, गुढ़ा गौड़जी/विले पार्ले, मुम्बई

श्रीमान लक्ष्मीनारायणजी

निवास- दहिसर (मुंबई), मूल निवास दाँता
पुत्र स्व. दुर्गादेवी भोलुरामजी दमीवाल, गोवटी, राजस्थान
एवं स्व. रामेश्वरजी हीरालालजी किरोड़ीवाल,
दाँता, राजस्थान/ मलाड़, मुंबई

मम्मी, आपकी याद निरन्तर आती रहती है, आपकी कमी हमेशा महसूस होती है।

और पापा, मम्मी के स्वर्गवास के दो साल के भीतर ही आप भी हमें छोड़ कर चले गए इसका बहुत दुख है, पर खुशी भी है की अब आप और मम्मी वैकुंठ धाम में पुनः एक साथ हो गए हैं। ईश्वर आप दोनों को सदैव अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

हम सभी परिवारजन आप दोनों को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

11.11.1954 - 16.11.2021

जन्म : कृष्ण प्रतिपदा, मार्गशिर्ष माह, विक्रम संवत 2011
वैकुंठ गमन : कार्तिक माह, शुक्ल त्रयोदशी, विक्रम संवत 2078

13.11.1951 - 6.10.2023

जन्म : शुक्ल पूर्णिमा, कार्तिक माह, विक्रम संवत 2008
वैकुंठ गमन : कृष्ण अष्टमी, अश्विन माह, विक्रम संवत 2080

श्रद्धावंतः

पुत्र-पुत्रवधु : विजय-सोना, **पुत्री :** वर्षा (सुमन), **पुत्री - जवाई :** शीतल - सुशीलजी, वर्ली (मुम्बई), नमिता - गौरवजी, कलमबोली (नयी मुम्बई), **दोहिता - दोहिती :** जीत, किआंशा, **काकीजी :** विमला देवी रामगोपालजी किरोड़ीवाल, मलाड़ (मुम्बई), **काकाजी- काकीजी :** नेमिचन्दजी हीरालाल किरोड़ीवाल-स्व. सुमित्रा देवी, मुम्बई, **भाभी :** रतनी देवी भँवरलालजी किरोड़ीवाल, दाँतारामगढ़, **भाई-भाभी :** पुरुषोत्तमजी-सात्री, मुम्बई, रामचंद्रजी-गीता, पालघर (मुंबई),
बहन-बहनोई: स्व. शारदा बाई- बनवारीजी बबेरीवाल, इंदौर, मंजू बाई - कृष्णगोपालजी मारवाल, वापी, **अन्य भ्राताः** द्वारकाप्रसाद, स्व. लक्ष्मीचंद, फूलचंद, अशोक, बालकृष्ण, महेश, भरत, पवन, दिनेश, स्व. जगदीश, जयप्रकाश, नंदलाल, नटवर, स्व. सुरेंद्र, स्व. वासुदेव, मनसुख, गजानंद, इंदरचंद, मुरारीप्रसाद। **अन्य बहन- बहनोई:** स्व. गोमती - बनवारीजी, तारामणी - जयचंदजी, स्व. मधु-सतीशजी, स्व. संतोष-स्व. बाबुलालजी, ज्योत्स्ना-रमेशजी, गीता-स्व. बाबुलालजी, हेमलता - अरुणजी, संगीता - बद्रीनारायनजी, सरोज - ओमप्रकाशजी एवं अन्य सभी बहनें-बहनोई।
भतीजे, भतीजियाँ : ललिता - वीरेंद्रजी, स्व. मुकेश, राजेश -सरिता, राकेश - हर्षा, मनीषा - अनिलजी, निशा - महेन्द्रजी, रोहित - निशा, ज्योति - जिगनेशजी, शिल्पा - वैभवजी, प्रभा - अदित्यजी, मनीष - मीनाक्षी, मोहित - बबिता, श्याम, मयंक, तनय,अंजलि, गुंजन, जिया एवं अन्य सभी भतीजे, भतीजियाँ, **भांजे - भांजियाँ :** विक्की - निकिता, विशाल - स्वाति, अंजू - मनीषजी, अजय, नरेश, हिमांशु (बंटी) - दीपा, देवेश - सीता, मनीष - अर्पणा, योगेश - सुधा, रितेश - नूतन, दीपेन - निकिता, ज्योति - हिमांशुजी, खुशबू - मानप्रकाशजी, कोमल - रोहितजी एवं अन्य सभी भांजे - भांजियाँ।
स्व. लक्ष्मीनारायणजी का ननिहाल पक्ष : नानाजी: स्व. भोलुरामजी सुखदेवजी दमीवाल, **मामाजी:** स्व. हरीप्रकाशजी भोलुरामजी दमीवाल, **भाई:** झाबरमलजी, ओमप्रकाशजी एवं सम्पूर्ण दमीवाल परिवार, गोवटी, राजस्थान।, **स्व. लक्ष्मीनारायणजी का ससुराल पक्ष: सास - ससुर :** स्व. भंवरीदेवी मुरलीधरजी खोवाल, रघुनाथगढ़ एवं स्व. मातादीनजी सूरजमलजी घोड़ेला, गुढ़ा गौड़जी/विले पारले, मुंबई, **मासी सास:** श्रीमती घीसीदेवी बनवारीलालजी घोड़ेला, हर्ष भोया , **साली - साढू भाई:** स्व.विमला देवी - सुरेन्द्रजी, पांडव नगर (दिल्ली), मीना - देवेंद्रजी, सिविल लाइंस (जयपुर), **साला - सलहज:** महेश - मंजू, गुढा गौड़जी, स्व. किशोर - पुष्पा, बोरीवली (मुम्बई) एवं सम्पूर्ण ससुराल पक्ष, गुढा गौड़जी/मुंबई **एवं अन्य सभी कुटुम्ब जन, रिश्तेदार, मित्र गण एवं शुभचिंतक।**

इनके जीवन से जुड़ी कुछ स्मृतियां देखने के लिए इनके फेसबुक पेज को फॉलो करें। Facebook ID: laxminarayan.varma.92 और sushila.varma.106 सम्पर्क : 9867177188

श्रद्धांजलि

सिद्धार्थ वर्मा (घोड़ीवाल)

(पुत्र श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल)

द्वितीय पुण्य तिथि 5 दिसम्बर, 2023

हम सभी परिवारजन अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

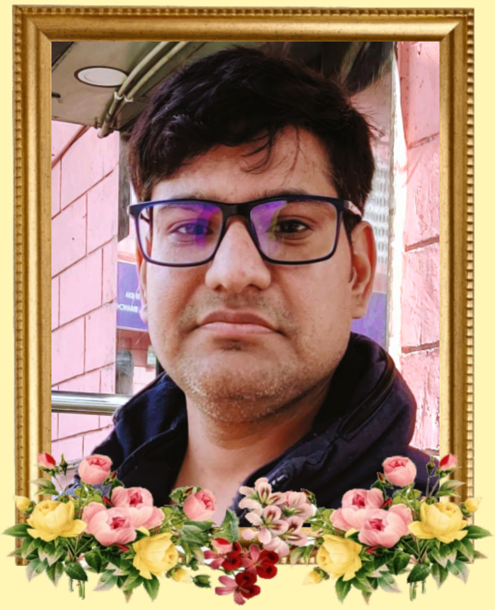

जन्म : 16 जुलाई 1988
स्वर्गवास : 5 दिसम्बर, 2021

श्रद्धान्वत

पिता : मोहन कुमार, **माँ :** माया वर्मा, **पत्नी :** लक्षिका कुमावत, **पुत्री :** रिध्विका (राशि), **भाई :** कपिल कुमार **भाभी :** पूनम कुमावत, **भतीजी :** दिव्यांशी (आर्वी), **भतीजा :** दैविक (दक्ष)

समस्त घोड़ीवाल परिवार (कुमावत)
8/198 मालवीया नगर, जयपुर

प्रतिष्ठान : नेशनल टैलर्स, राजपार्क, जवाहर नगर(जयपुर)
मो. 98291 69391, 7790905548

SP CONSTRUCTION

Building INDIA'S Construction

SHASHI PAL KUMAWAT

B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015
Web: spconst.co.in   E-Mail: info@spconst.co.in

Shubh Laxmi Crane & Engineers

(Formally Know as Shri Laxmi Crane Service)

All India Equipments Rental Service Provider

Jai Kishan Kumawat
+91- 9829125428
+91- 9887011175

Shankar Lal Kumawat
+91- 9887227775

Mukesh Kumar Kumawat
+91- 9887337775

H.O.
Shree Heera Bhawan, Dholi Mandi
Chomu-303702 Distt. Jaipur (Rajasthan)

B.O.
Near Patwar Bhawan,Village - Kawas
Distt. Barmer - 344035 (Rajasthan)

shreelaxmicranes@gmail.com
shubhlaxmicrane@gmail.com

www : shrilaxmicrane.com

Graphic By : Art point # 9928064300

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018